



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

विक्रण



राजभाषा
हीरक जयंती

बयालीसवां अंक
प्रथम संस्करण
2024-25



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर



मुखपृष्ठ चित्र – “जारुल” महाराष्ट्र का राजकीय पुष्प

कार्यालय की गृह-पत्रिका किरण अंक 41 वां का विमोचन समारोह में प्रधान महालेखाकार महोदया सहित वरिष्ठतम अधिकारीगण

किरण परिवार

संरक्षक



सुश्री जया भगत
प्रधान महालेखाकार

परामर्श समिति



श्री अक्षय मोहन खंडारे
वरिष्ठ उप महालेखाकार



डॉ. भुषण बी. भिरुड
वरिष्ठ उप महालेखाकार



श्री जे. बी. गुप्ता
वरिष्ठ उप महालेखाकार

प्रधान संपादक



सुश्री सारिका पाटील
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक



डॉ. नयना वि. पाटील
हिन्दी अधिकारी

संपादक सहयोगी



श्री विष्णंत उ. रामटेके
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक



कुमारी प्रियंका
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

चयन समिति



श्री कुलभुषण शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



सुश्री दीपिका मंशारमानी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अनुक्रमणिका

विधा	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ
1	संदेश		iii - xi
2	समाचार - कार्यालय समाचार		1
3	ई-पीपीओ एवं पेंशनर्स समाधान		8
4	राजभाषा समाचार		12
5	कविता - इन्सान	मनीष कुमार खरे	16
6	कविता - बचपन	अनिल वैष्णव	16
7	लेख - प्रदुषण	आरती सोनाकर	17
8	लेख - ताडोबा की यात्रा : अंधारी टाइगर रिजर्व - एक सफारी अनुभव	गीतांजली घांगरेकर	18
9	कविता - न जाने कहाँ गई वो राहे	बाल बिहारी प्रजापति	22
10	लेख - वसुधैव कुटुंबकम्	प्रशांत त्रिंबक कपाले	23
11	गज़ल - गज़ल-शिक्षा	सैय्यद इकबाल अली	25
12	लेख - बोलीभाषा और उससे लगाव	मोहम्मद सलीम	26
13	कविता - बेटियाँ	मनीष कुमार खरे	27
14	गज़ल	सैय्यद इकबाल अली	27
15	लेख - ईच्छाशक्ति	यशवंत खापरे	28
16	कविता - हमारे नेता	निशी शर्मा	30
17	लेख - हिंसा है मांसाहार	सुरज ठाकरे	31
18	कविता - जिंदगी का नया दौर	मनीष कुमार खरे	32
19	कविता - जिंदगी का सफर	व्ही.वैशाली	32
20	लेख - अंधश्रद्धा	मनीष कुमार खरे	33
21	लेख - हमें भारतीय होने पर गर्व क्यों होना चाहिए ?	पीहू भट्टाचार्य	34
22	लेख - निवेश	प्रशांत त्रिंबक कपाले	36
23	लेख - अनाथालय की मेरी यात्रा	कुमारी प्रियंका	38
24	कविता - सर्दिया आनेवाली है...	मोहम्मद सलीम	39
25	लेख - जैसी दृष्टी-वैसी सृष्टी	कविता चौरिया	40

अस्वीकरण : “पत्रिका में व्यक्त विचार, रचनाकारों के निजी विचार हैं व प्रकाशित रचना में प्रस्तुत तथ्य, आँकड़े व व्याख्या की प्रामाणिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं। प्रकाशित रचना से संपादक मंडल/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इससे उत्पन्न किसी भी वाद-विवाद की जिम्मेदारी ‘किरण परिवार’ अस्वीकार करता है। - प्रधान संपादक एवं संपादक

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद दूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

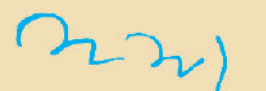
राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



संदेश



कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका किरण के 42 वें अंक के प्रथम संस्करण को प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष अनुभूति हो रही है। हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में राजभाषा हिंदी पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'किरण' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय द्वारा किया जा रहा है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्रों से 'किरण' पत्रिका को सुसज्जित किया गया है। किरण पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों, लेखकों, रचनाकारों को उनके योगदान के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

यह हर्ष एवं गर्व की बात है कि 'किरण' पत्रिका के चालीसवें अंक को नराकास-2 के द्वारा 'द्वितीय' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहे, ऐसी कामना करती हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जया भगत

जया भगत

प्रधान महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि हिन्दी पत्रिका “किरण” का 42 वां अंक (प्रथम संस्करण) प्रकाशित हो रहा है। कार्यालय के प्रत्येक अधिकारी / कर्मचारी द्वारा दिये गए योगदान एवं राजभाषा के प्रति उनके समर्पण से मैं अभिभूत हूँ।

हिन्दी भाषा एक ऐसी कड़ी है जिससे संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। बहुत गर्व की बात है कि “किरण” पत्रिका मुख्यालय एवं राजभाषा के निर्देशों का पालन करते हुए हिन्दी की विकास यात्रा में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

मैं पत्रिका के संपादक एवं सभी रचनाकारों को जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में योगदान दिया है, उनका अभिनंदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार अभियान में अपना विशेष योगदान देगी।

अक्षय मोहन खंडारे
वरिष्ठ उप महालेखाकार
एवं राजभाषा अधिकारी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



हिंदी भाषा के प्रति समर्पण की भावना और संदर्भित अथक प्रयासों ने इसे अंतराष्ट्रीय भाषा का स्थान दिलाया। आज राजभाषा को जन भाषा से जोड़ने का दायित्व हम सबका है। कार्यालय की 'किरण' पत्रिका के 42 वें अंक (प्रथम संस्करण) के प्रकाशन का श्रेय मुख्य रूप से इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जाता है, जिन्होंने इस पत्रिका में लेख, रचनाएं, कहानी, गजल, आदि दिये हैं। वे बधाई के पात्र हैं क्योंकि उत्कृष्ट रचनाओं से ही पत्रिका में निरखार आता है।

कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों का यह उत्तरदायित्व है कि वे अपनी ओर से उत्कृष्ट सामग्री देकर पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करें जिससे राजभाषा के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो, यही इस पत्रिका का लक्ष्य है।

मैं इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएँ देता हूँ।

भुषण

डॉ. भुषण बी. भिरुड
वरिष्ठ उप महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



कार्यालय की “किरण” पत्रिका के 42 वें अंक (प्रथम संस्करण) को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

“किरण” पत्रिका जहाँ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है वहीं प्रत्येक व्यक्ति के भीतर छिपे रचनाकार को एक मंच भी प्रदान करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है।

कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा एवं जागरुकता बढ़ाने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। “किरण” पत्रिका इस दिशा में सहायक सिद्ध होगी।

अंत में, मैं पत्रिका के संरक्षक प्रधान महालेखाकार महोदय एवं समस्त रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा के संवर्धन में अपना सार्थक योगदान देगी और कार्यालय स्तर पर हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा मिलेगा।

मैं “किरण” पत्रिका के 42 वें अंक (प्रथम संस्करण) की उत्तरोत्तर सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

जे.बी.गुप्ता

जे. बी. गुप्ता

वरिष्ठ उप महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'किरण' के 42 वें अंक के प्रथम संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी, ऐसा विश्वास है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रचार एवं विकास करने का दायित्व भारत सरकार पर है। इसी दायित्व के निर्वहन में हमारे कार्यालय का एक छोटा सा प्रयास है- हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'किरण' का प्रकाशन। पत्रिका का प्रस्तुत अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन देने के प्रमुख उद्देश्य के अनुरूप है।

पत्रिका के माध्यम से हम अपने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में छुपी रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। यह एक प्रशंसा का विषय है कि कार्यालयीन व्यस्तता के बाद भी हमारे रचनाकार सुंदर लेखों एवं रचनाओं से हमारी पत्रिका को सुसज्जित करते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि यह 'किरण' पत्रिका का यह अंक आप सब को पसंद आएगा तथा कार्यालय के सभी कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रति रूचि बढ़ाने में सक्षम होगा।

शुभकामनाओं सहित।

सापेक्षिक

सुश्री सारिका पाटील

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संपादकीय

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'किरण' के 42वें अंक के प्रथम संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत हर्ष का विषय है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित राजभाषा हिंदी संबंधी प्रमुख निर्देशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का माहौल तयार करने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करते हैं।

भारतीय संस्कृति अगणित भाषाओं से समृद्ध है। उन्हीं में से एक भाषा हिंदी है, जिसे करोड़ों भारतीयों द्वारा बोला जाता है एवं भारत के संविधान ने राजभाषा का दर्जा दिया है। इसमें संपर्क भाषा बनने की क्षमता है। इसी दिशा में हमारे योगदान स्वरूप हिंदी गृह पत्रिका 'किरण' का संपादन किया जा रहा है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में बहुत ही सहज-सरल एवं स्वाभाविक हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है ताकि आम जन इन लेखों को आसानी से समझ सकें।

वास्तव में इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के काम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना है। राजभाषा हिंदी के विकास में यह पत्रिका एक छोटा-सा किंतु हमारे लिए महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय का दर्पण है।

हम माननीय प्रधान महालेखाकार महोदया एवं सभी वरिष्ठ उप महालेखाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने कदम-कदम पर अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन तथा प्रेरणा दी। आशा है कि यह अंक आप सबको पसंद आएगा।

अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं।

हार्दिक शुभेच्छाओं सहित।

राजभाषा अनुभाग

(x)



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), नागपुर
द्वारा शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए वरिष्ठ उपमहालेखाकार / प्रशासन (मध्य में)
एवं वरिष्ठ लेखाधिकारी / राजभाषा

कार्यालय समाचार

कार्यालय में कल्याण अनुभाग द्वारा सदैव विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी श्रृंखला में दिनांक 1 अप्रैल 2024 से अब तक निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस - 2024

2) दिनांक 21 जून 2024 को आचार्य नरेंद्र आर्य को योग के महत्त्व पर व्याख्यान और प्रात्याक्षिक हेतु आमंत्रित किया गया। इस आयोजन में आचार्य नरेंद्र आर्य ने “योग का अपने जीवन में महत्त्व क्या है?” यह समझाते हुए कार्यालय के लगभग 200 से अधिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रात्याक्षिक दिखाया जिसका लाभ सभागृह में उपस्थित सभी ने उठाया। इस समारोह में प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री जया भगत, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) व राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय खंडारे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (निर्माण कार्य लेखा, निर्माण कार्य विविध-1 एवं हकदारी-पेंशन) श्री भुषण भिरुड एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा, व्हीएलसी एवं हकदारी-निधि) श्री जे. बी. गुप्ता सहित कल्याण अधिकारी सुश्री सारिका पाटील ने भी भाग लिया।

ध्यान साधना का आयोजन

2) कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए माह जुलाई में दिनांक 11 जुलाई, 18 जुलाई तथा 25 जुलाई 2024 को शाम 05.30 बजे बहुउद्देशीय सभागृह में योगाचार्य आचार्य नरेंद्र आर्य इनके नेतृत्व में ध्यान साधना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

15 अगस्त 2024 को देशभक्ति गीतों की प्रस्तुती

3) स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में, 15 अगस्त 2024 को सुबह ध्वजारोहण के बाद कार्यालयीन कर्मचारियों द्वारा विविध देशभक्ति गीतों की प्रस्तुती की गई। इसमें राम खनगन, दिलीप परिडा, विकास गौतेले, मोहम्मद सलीम, रूपाली गुप्ता एवं पुनम निमजे सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में कार्यालयीन कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक देशभक्ति से ओत-प्रोत सुमधुर गीत प्रस्तुत किए गए, जिसका आनंद सभागृह में उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने लिया। कार्यक्रम का मंच संचालन कल्याण सहायक मोहम्मद सलीम ने किया।

स्वतंत्रता संग्राम इस विषय पर कला प्रदर्शनी

4) 78 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय में स्वतंत्रता संग्राम इस विषय पर कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के वरिष्ठ लेखाकार श्री जयंत तांदुळकर द्वारा बेहतरीन ऐतिहासिक चित्रों तथा संबंधित अन्य सामग्री को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी का लाभ कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ ही लेखापरीक्षा कार्यालय एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्था के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भी लिया।

कार्यालय के नवीकृत द्वितीय तल का उद्घाटन

5) दिनांक 26 अगस्त 2024 को कार्यालय की इमारत के नवीकृत द्वितीय तल का उद्घाटन प्रधान महालेखाकार सुश्री जया भगत इनके कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

सेवानिवृत्ति के अवसर पर (अगस्त 2024)



योग दिवस दि. 21 जून 2024



स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2024



स्वतंत्रता संग्राम पर कला प्रदर्शनी का आयोजन दि. 19-08-2024



कार्यालय के द्वितीय तल का उद्घाटन दि.26-08-24



आंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम

कार्यालय में दिनांक 8 मार्च 2024 को आंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में नागपुर की प्रख्यात स्त्री-रोग तज्ञ डॉक्टर स्वाति सारडा को स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन करने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने महिलाओं में विटामिन की कमी के कारण होने वाले रोग तथा उन्हें कैसे दूर रख सकते हैं, इस पर मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि विटामिन सप्लीमेंट्स लेना सुरक्षित है एवं 40 वर्ष की आयु के पश्चात डॉक्टर के परामर्श से इनका सेवन अनिवार्य रूप से करना चाहिए। साथ ही सर्वाइकल कैंसर के लिए दिए जाने वाले वैक्सिन, उन्हें कैसे एवं कब लगवाना चाहिए यह सविस्तर बताया। व्यायाम एवं पर्याप्त निंद लेना आवश्यक है, इस पर भी जोर दिया। मेनोपॉज की अवधि में शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य कैसे अर्जित करें, इस पर भी मार्गदर्शन किया।



E-PPO और 'पेंशनर्स समाधान'

कार्यालय प्रधान महालेखाकर (लेखा व हकदारी) के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को 2 नए डिजिटल उपक्रम 'e-PPO' और 'पेंशनर्स समाधान' के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएँ। यह हमारा सौभाग्य है की हमारे इस वर्तमान समय में जब पूरा विश्व डिजिटल दुनिया में कदम रख रहा है तो हमारे कार्यालय ने भी 2 नए डिजिटल उपक्रमों का आरंभ किया।



'e-PPO' और 'पेंशनर्स समाधान' का सुझाव एवं मार्गदर्शन

सुश्री जया भगत (प्रधान महालेखाकार, महाराष्ट्र, नागपुर) महोदया ने दिया।



कार्यान्वयन - श्री भुषण भिरुड (वरिष्ठ उप महालेखाकार पेंशन) महोदय ने किया।



e-PPO को सफलता पूर्वक डिजिटल रूप में लाने का काम
श्री कुलभुषण शर्मा (वरिष्ठ लेखा अधिकारी -PM) ने किया।



पेंशनर्स समाधान को सुचारु रूप से चलाने का काम
- श्री आशीष कुमार चौरसिया (सहायक लेखा अधिकारी E (पेंशन) ने किया।

e-PPO का मतलब "इलेक्ट्रॉनिक पेंशन पेमेंट ऑर्डर" है। हमारी जो 31/May/2023 तक की प्रणाली थी उसमें हमारा कार्यालय प्राधिकार पत्र स्पीड पोस्ट के माध्यम से कोषागार, विभाग तथा पेंशन भोगी को अलग-अलग भेजते थे। यह प्राधिकार पत्र पेपर प्रिंटेड तथा वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा प्रत्यक्ष रूप से हस्ताक्षरित होकर डाक द्वारा भेजा जाता था। लेकिन अब महाराष्ट्र सरकार वित्त विभाग के 22/05/2024 के G.R. के अनुसार 01/06/2024 से पेंशन की शुरुवात के लिए अधिक इंतज़ार नहीं करना होगा, क्योंकि इस पूरी प्रक्रिया को संपूर्ण विदर्भ और मराठवाड़ा के पेंशन धारकों के लिए ऑनलाइन कर दिया गया है। जिसका नाम हमने e-PPO रखा है। इसके तहत पेंशन धारक अब अपने प्राधिकार पत्र की डिजिटल कॉपी ऑनलाइन तरीके से स्वयं भी महाराष्ट्र स्टेट गवर्नमेंट के पोर्टल Mahakosh पे जाकर प्रिंट निकाल सकते हैं और Download भी कर सकते हैं।

e-PPO के अंतर्गत हमने SMS मैसेजिंग का प्रावधान भी रखा है। पेंशन धारक को हमारे ऑफिस कि तरफ से 2 बार मैसेज भेजा जाता है। पहली बार केस की प्रविष्टि डिजिटल पोर्टल पर होने के बाद और दूसरी बार संपूर्ण स्क्रीनिंग के पश्चात डिजिटल प्राधिकार पत्र तैयार होने पर मैसेज भेजा जाता है। इसके लिए मोबाइल नंबर सूचित करना आवश्यक होता है, मोबाइल नंबर नहीं रहने की स्थिति में मैसेज नहीं जाता है। साथ ही साथ जब हमारे तरफ से केस का प्राधिकार पत्र स्टेट गवर्नमेंट को दे दिया जाता है तो Mahakosh की तरफ से भी मैसेज भेजा जाता है। ये सारे तरीके पेंशन भोगी को उनकी केस की स्थिति जानने के लिए बनाए गए हैं।

प्राधिकार पत्र को ऑनलाइन देखने या डाऊनलोड करने के लिए पेंशन भोगी को महाराष्ट्र सरकार की वेबसाइट <https://mahakosh.gov.in/m/> पर जाना है फिर उसके अंतर्गत आने वाले Nivruttivetanwahini टैब पर क्लिक करने के साथ ही आपके सामने एक नई स्क्रीन खुलेगी। जहाँ पर आपको अपने username में PEN_PPO Number तथा पासवर्ड में ifms123 डालने के बाद captcha कोड डालकर submit करना है। अगर आपका मोबाइल नंबर पहले से ही सत्यापित (verified) है तो यह सीधे आपकी स्क्रीन जिस पर आपका नाम दिखाया गया होगा वह खुलेगी, अन्यथा आपको पहले अपना मोबाइल नंबर सत्यापित (verify) करना होगा। उसके बाद आपको pension report के अंदर EPPO-LIBRARY खोलनी है, जहाँ पर आपको आपका PPO, CPO तथा GPO दिखाया गया है। साथ ही साथ आप प्रिंट बटन के माध्यम से अपने प्राधिकार पत्र की कॉपी Save या Download भी कर सकते हैं।

‘पेंशनर्स समाधान’ – इस उपक्रम का मुख्य उद्देश्य पेंशन धारक या पारिवारिक पेंशन धारक की समस्याओं को डिजिटल माध्यम से सुनना और उनकी समस्या का कम समय में जल्द से जल्द समाधान करना है।



इसके तहत पेंशन भोगी या पारिवारिक पेंशन धारक जिनका केस हमारे कार्यालय में प्रस्तुत (submit) किए हुए एक माह से अधिक समय हो गया है, वह घर बैठे अपनी समस्या हमें बता सकते हैं तथा WhatsApp विडियो कॉल के जरिये अपनी समस्या का समाधान पा सकते हैं।

'm/PENSIONERS' SAMADHAN' - Pension at your Doorstep' उपक्रम में शामिल होने के लिए हमने कई प्रावधान रखे हैं, Digitally Updated पेंशन भोगी हमारे कार्यालय की वेबसाइट <https://cag.gov.in/ae/nagpur/en> पर जाकर PENSIONERS' SAMADHAN टैब के अंदर दिये गए Registration Link पर जाकर अपनी शिकायत (Grievance) पंजीकृत कर सकते हैं। अगर शिकायतकर्ता Digitally Updated नहीं है तो उसके लिए हमने Offline का भी प्रावधान रखा है जिसके तहत शिकायतकर्ता हमारे टोल फ्री नंबर 18002337834 पर कॉल कर सकते हैं या फिर 0712-2992250 पर कॉल कर सकते हैं। हमने एक Dedicated Landline नंबर भी रखा है 0712-2561378, 2555592, 2549006, 2549007 EXTN-311 जिस पर कॉल कर के भी अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते हैं। हमने फिजिकल ड्रॉप बॉक्स भी रखा है जिसके तहत शिकायतकर्ता हमारे पास आकर अपनी शिकायत "PENSIONERS' SAMADHAN" में शामिल होने के लिए दर्ज करवा सकते हैं। अगर

The Principal Accountant General (A&E)-II, Maharashtra, Nagpur
Invites all the retired Government officials of
Vidarbha and Marathwada region
to join our new initiative
PENSIONERS' SAMADHAAN
Pension at your Doorstep!
through WhatsApp/Zoom Video Call

Options to Register for PENSIONERS' SAMADHAAN:

Click the link available under Menu Option
'PENSIONERS' SAMADHAAN' on our office website
<https://cag.gov.in/ae/nagpur/en>

Call the Toll Free No. 18002337834 or

Call on 0712-2992250 or

Call on Intercom Number: 0712-2561378, 2555592,
2549006, 2549007 EXT: 311

Documents submitted through 'PensionHelp.mh2.ae@cag.gov.in' will only be accepted

PENSION KI AB NO TENSION



OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR
PENSION KI AB NO TENSION
PENSIONERS' SAMADHAAN
Pension at your Doorstep

1. REGISTRATION
Pensioners/Applicants can Register for the PENSIONERS' SAMADHAAN through:
1. Online Form on the Office Website
2. Calling on our Toll Free Number
3. Calling on our Intercom Number

2. PROCESSING
Pensioner's details are verified and the case is sent to the Section for processing

3. INTIMATION
Date and Time are conveyed to the Pensioners for PENSIONERS' SAMADHAAN through Direct Interaction

4. INTERACTION
Pensioners' grievances are heard and resolved through WhatsApp Video call

5. RESPONSES AND FEEDBACK
Weekly Responses and Feedback for the PENSIONERS' SAMADHAAN are monitored by the Principal Accountant General through Internal Reports

Registration details for PENSIONERS' SAMADHAAN :
(USE ANY ONE)
• Click on the link under PENSIONERS' SAMADHAAN on our Office Website
<https://cag.gov.in/ae/nagpur/en>
• Call the Toll Free Number : 18002337834
• Call on 0712-2992250
• Call on Intercom Number : 0712-2561378, 2555592, 2549006, 2549007 EXT: 311

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, MAHARASHTRA, NAGPUR
PENSION KI AB NO TENSION
PENSIONERS' SAMADHAAN
Pension at your Doorstep!
through WhatsApp/Zoom Video Call

Documents submitted through
PensionHelp.mh2.ae@cag.gov.in
will only be accepted

How to Register:

- https://cag.gov.in/ae/nagpur/en > PENSIONERS' SAMADHAAN > Registration Link
- Call on Toll Free No. 1800 233 7834 or Call on 0712-2992250
- Mail us on: PensionHelp.mh2.ae@cag.gov.in
- Intercom Number 0712-2561378, 2555592, 2549006, 2549007 EXT: 311
- Physical Drop Box at PBO

Office of the Principal Accountant General (A&E)-II,
Maharashtra, Nagpur
Opposite Basil Bhawan, Civil Lines - 440012

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) -II, महाराष्ट्र, नागपुर-४४०००१
निवृत्तिवैतनाधारकांच्या समस्यांचे निवारण करण्यासाठी सुरु करण्यात आलेले विविध उपक्रम

१. ई - पी पी ओ

नागपुर जिल्ह्यातील सर्व पेंशनधारकांसाठी दि.२२.१२.२०२३ पासून ई-पीपीओ (इलेक्ट्रॉनिक पेंशन पेमेंट ऑर्डर) निर्धारित करण्यात येत आहे. या पुढाकार लवकरच आमच्या अखत्यारीत येण-या निवर्तन व मराठवाडा क्षेत्रातील इतर जिल्ह्यांतील सर्व नवीन पेंशनधारकांना उपलब्ध करून दिला जाईल.

२. पेंशनर्स समाधान

The Principal Accountant General (A&E)-II, Maharashtra, Nagpur
Invites all the retired government officials of Maharashtra and Marathwada region to join our new initiative
PENSIONERS' SAMADHAAN
Pension at your Doorstep!
Registration details for PENSIONERS' SAMADHAAN :
(USE ANY ONE)
• Click on the link available under Menu Option 'PENSIONERS' SAMADHAAN' on our office website
<https://cag.gov.in/ae/nagpur/en>
• Call the Toll Free No. 18002337834 or
• Call on 0712-2992250 or
• Call on Intercom Number: 0712-2561378, 2555592, 2549006, 2549007 EXT: 311

पेंशन संबंधित सर्व समस्यांबाबत आता घरबसल्या करा आमच्या अधिकारी-यांनी विडिओ कॉलवर संपाद. Whatsapp आणि Zoom कॉल साठी या लिंकवर पंजीकरण करा
<https://cag.gov.in/ae/nagpur/en>

३. TOLL FREE क्रमांक

कार्यालयीन वेळेत या क्रमांकावर कॉल करून पेंशनर्स समाधान साठी नोंदणी करा अथवा आपल्या पेंशन संबंधित समस्यांसाठी थेट आमच्या प्रतिनिधीशी बोला.

संपर्क करा - **18002337834**

४. ऑनलाइन हेल्प डेस्क

Online Helpdesk
PensionHelp.mh2.ae@cag.gov.in

ऑनलाइन हेल्प डेस्क यंत्रणा सुरु करण्यात आली आहे ज्याद्वारे सीसीओ, कोषागार अधिकारी, पेंशनधारक या कार्यालयाला पत्र लिहून त्यांच्या प्रश्नांचा संपूर्ण घेऊ शकतात.

मेल करा -
PensionHelp.mh2.ae@cag.gov.in

आता पेंशनचे टेंशन नाही

पेंशन विभाग, ओल्ड बिल्डिंग, सिविल लाईन,
महाराष्ट्र, नागपुर - 440001
Telephone No. 0712-2561378, 2555592, 2549006 & 2549007
Website: <https://cag.gov.in/ae/nagpur/en>
email: agomaharashtra2@cag.gov.in

राजभाषा समाचार

भारत सरकार की राजभाषा नीति के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सतत कार्य किए जाते हैं। सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु अधिकारियों और कर्मचारियों को जहाँ एक ओर प्रोत्साहित किया जाता है वहीं उन्हें राजभाषा संबंधित नियमों, नीतियों, अधिनियमों, धाराओं से पूर्ण रूप से अवगत कराकर, उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। वर्तमान में, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम अनुसार दिए गए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किए गए सतत प्रयासों के फलस्वरूप ही कार्यालय द्वारा 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से किए गए हिंदी के पत्राचार का निर्धारित समेकित 90% प्रतिशत से अधिक लक्ष्य प्राप्त किया है।

कार्यालय में राजभाषा नीति के प्रमुख निदेशों को ध्यान में रखते हुए तथा वार्षिक कार्यक्रम के प्रमुख मर्दों के अनुपालन को सुनिश्चित करते हुए निम्नवत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की गई है।

1) कार्यालयीन राजभाषा समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन

मार्च-2024 और जून-2024 को समाप्त तिमाही में कुल 2 बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट की मददवार समीक्षा की गई। प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय से 'क' 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से किए गए हिंदी के पत्राचार का समेकित 90% प्रतिशत से अधिक के लक्ष्य को प्राप्त करने पर संतोष व्यक्त करते हुए इसे बनाए रखने के निर्देश दिए।

2) हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कार्यालय में हिंदी कार्यशालाओं को आयोजित करने के एकमात्र उद्देश्य यह है कि अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाना, हिन्दी में किए जाने वाले कार्य की गुणवत्ता को उन्नत करना और उन्हें हिंदी के कार्य में दक्ष बनाना। इसके साथ ही कार्यालयीन व्यावहारिक कठिनाइयों को भी दूर करना और भारत सरकार की राजभाषा नीति संबंधित समय-समय पर जारी अद्यतन सूचनाओं से अवगत कराना। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्यालय में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है ताकि कार्मिक राजभाषा नीति के नियमों/अधिनियमों का अनुपालन कर अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।



राजभाषा विभाग के नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक पूर्ण कार्य दिवस की है जिसमें



न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करना है जिसका पूर्ण-रूपेण पालन किया जाता है।

प्रति तिमाही में एक (1) पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाना अपेक्षित है। कार्यालय द्वारा अब तक इस वित्तीय वर्ष 2024-2025 में 2 कार्यशालाएं आयोजित की गईं। जिसमें दिनांक 20.06.2024 को आयोजित प्रथम कार्यशाला में लगभग

20 से 25 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसके अंतर्गत 75 मिनट के चार सत्रों आयोजन किया गया। प्रथम हिंदी कार्यशाला में संकाय सदस्यों के रूप में डॉ.नयना पाटील, हिंदी अधिकारी, श्री विष्णांत रामटेके, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक और कुमारी प्रियंका, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मार्गदर्शन किया। दिनांक 30.07.2024 को आयोजित द्वितीय हिंदी कार्यशाला में नवनियुक्त 45 लेखाकारों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संकाय सदस्यों के रूप में डॉ.नयना पाटील, हिंदी अधिकारी, श्री विष्णांत रामटेके, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक और कुमारी प्रियंका, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मार्गदर्शन किया।

3) हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संचालित पारंगत पाठ्यक्रम का आयोजन:

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना उपसंस्थान, नागपुर द्वारा समय-समय पर जारी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार नियमित रूप से अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है। इस वर्ष 2023-2024 में जनवरी-मई-2024 सत्र में कार्यालय से कुल 21 कर्मिकों ने पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण की।

4) राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी संकल्प का अनुपालन

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी संकल्प के सन्दर्भ में मुख्यालय के निर्देशानुसार सभी कर्मिकों को आदेश दिए गए हैं कि महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेश का सत्ती से अनुपालन किया जाए। संकल्प में उल्लिखित सभी मदों के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं और वर्तमान में निम्न मदों पर अनुपालना की जा रही है और आगे भी कार्रवाई जारी रहेंगी।

- क) राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी कागजात को द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है।
- ख) राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर शत-प्रतिशत हिंदी में दिया जाना अनिवार्य है।
- ग) वेबसाइट द्विभाषी होनी चाहिए और इसे अद्यतन करते समय हिंदी के पृष्ठों को भी अनिवार्य रूप से अपलोड किया जाए।

5) वार्षिक कार्यक्रम 2024-2025 की अनुपालना

वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालना हेतु कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों में, विस्तृत विचार-विमर्श व आवश्यक निर्णय लिए जाने हेतु कार्यसूची में मुख्य बिन्दुओं को सम्मिलित किया गया और प्रत्येक बिंदु पर समिति के सदस्यों द्वारा क्रमबद्ध रूप से चर्चा की गई। विचार-विमर्श के दौरान प्रस्तुत सुझावों पर माननीय अध्यक्ष महोदया द्वारा आदेश जारी किए गए। इसके साथ ही प्रत्येक अनुभाग में वार्षिक कार्यक्रम का व्यापक परिचालन किया गया। वार्षिक कार्यक्रम 2024-2025 के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जाँच बिंदु स्थापित कर अनुदेश दिए गए। जिसका पूर्ण रूपेण अनुपालन किया जा रहा है।

6) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(नराकास), नागपुर (कार्यालय-2)

नराकास द्वारा प्रति छमाही में 2 बैठकों का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी और राजभाषा संबंधित अधिकारी व कर्मचारी अनिवार्य रूप से अपनी सहभागिता दर्ज करते हैं जिसमें छमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट पर गहन विचार-विमर्श कर हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता है साथ ही वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित मापदंडों/लक्ष्यों को भी प्राप्त करने हेतु दिशानिर्देश दिए जाते हैं। दिनांक 9.5.2024 को आयोजित छमाही बैठक में किरण पत्रिका के 40 वें अंक को नराकास-2 द्वारा नागपुर स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का-2) के जित छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

7) कार्यालयीन गृह-पत्रिका 'किरण' का प्रकाशन

कार्यालय की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार संबंधी गतिविधियों के साथ-साथ अन्य कार्यालयीन, सांस्कृतिक और रोचक प्रकार की विविध गतिविधियों को 'किरण' पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए सामग्री आमंत्रण, एकत्रीकरण, सामग्री का चयन, सामग्री को जांचना-सुधारना, संयोजन, संपादन, मुद्रण सम्बन्धी अनेक कार्य, मुद्रण की अद्यतन तकनीक को अपनाना, कागज, रंगों का तालमेल एवं चयन-संयोजन इत्यादि के साथ-साथ अधिकारियों सहित राजभाषा विभाग के समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सहित अन्य कार्य निष्पादित होते हैं। जिसमें अन्य कई घटक भी महत्वपूर्ण होते हैं अर्थात् पत्रिका का प्रकाशन एक सुनियोजित सृजनात्मक कार्य है जिसे पूर्ण रूप से निष्पादित किए जाने का प्रयास निरंतर किया जाता है।

किरण पत्रिका अंक 41 के प्रकाशन का कार्य किया गया है एवं उसका विमोचन दिनांक 27.05.2024 को प्रधान महानिदेशक महोदया द्वारा किया गया। इस प्रकार कार्यालय की गृह पत्रिका 'किरण' विगत चार दशकों से हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

गृह पत्रिका किरण अंक-41 का विमोचन



इन्सान



मनीष कुमार खरे
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

किसी के काम जो आये
उसे इन्सान कहते है
पराया दर्द अपनाये
उसे इंसान कहते है।
कभी धनवान है इतना
कभी इन्सान निर्धन है
कभी सुख है कभी दुख है
इसी का नाम जीवन है
जो मुश्किल में न घबरायें
उसे इन्सान कहते है
किसी के काम जो आये
उसे इन्सान कहते है ॥१॥
ये दुनिया एक उलझन है
कही धोखा कही ठोकर
कोई हंस हंस के जीता है
कोई जीता है रो-रोकर
जो गिरकर फिर संभल जाये
उसे इन्सान कहते है
किसी के काम जो आयें
उसे इन्सान कहते है ॥२॥
अगर गलती रूलाती है
तो राहें भी दिखाती है
मनुष्य गलती का पुतला है
जो अक्सर हो ही जाती है
जो करते ठीक गलती को
उसे इन्सान कहते है ॥३॥

बचपन



अनिल वैष्णव
सहायक लेखा अधिकारी

बचपन जर्ज से गुजर जाता है,
बाकि पन गुजरता रुक-रुक है।
बचपन ... बचपन एक दौर नहीं
ये तो पूरा एक युग है।
बचपन है नाम खिलौनों का,
सपनों, कहानियों, नन्हें-नन्हें छौनों का,
परियाँ, राजकुमार जिसमें आते हैं;
राक्षस और भूत सपनों में आकर डराते हैं।
बचपन की ख्वाहिशें अगर टूटे तो रुलाती सहीं हैं;
पर ज़िंदगी भर सताती नहीं हैं।
इस वक्त की हर बात हसीन होती है,
चाँद-तारों की बारात, आसमाँ-सी ज़मीन होती है।
बादलों का भी अपना एक रंग-रूप होता है:
तितलियों के पीछे भागना, उछल-कूद का तमाशा
भी खूब होता है।
ये वो वक्त है जो जल्दी गुजर जाता है;
फिर भी ताउम्र कहीं अंदर ठहर जाता है।
बचपन एक युग है कोई दौर नहीं
ये तो ऐसा सागर है, जिसका कोई छोर नहीं।



प्रदूषण

आरती अनिल सोनारकर

सहायक पर्यवेक्षक

विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले हैं, वहाँ कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख में से जन्मा है और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है।

प्रदूषण का अर्थ है प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना। प्रदूषण कई प्रकार का होता है। प्रमुख प्रदूषण है - वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।

वायु प्रदूषण - महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला है। वहाँ चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआँ, मोटर-वाहनों का काला धुआँ इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दुर्लभ हो गया है। मुंबई की महिलाएँ धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती हैं तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती हैं। ये कण सांस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं। यह समस्या वहाँ अधिक होती है जहाँ सघन आबादी होती है, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है।

जल प्रदूषण - कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गंधित जल सब नाली-नालों में घुल-मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं।

ध्वनि प्रदूषण - मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परंतु आजकल कल-कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पो,

लाऊड स्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनी ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

प्रदूषणों के दुष्परिणाम - उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लंबी सांस लेने तक को तरस गया है आदमी। गंदे जल के कारण कई बीमारियाँ फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर में पहुंचकर घात बीमारियाँ पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने से रिसी गैस के कारण हजारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण-प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक चलता है। सुखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण के कारण - प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन (एसी), ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। वृक्षों को अंधा-धुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादीवाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है।

सुधार के उपाय - विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए कि अधिक पेड़ लगाए जाएं, हरियाली की मात्रा अधिक हो, सड़कों के किनारों घने वृक्ष हों। आबादीवाले क्षेत्र खुले हो, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषण मल को नष्ट करने के उपाय सोचने चाहिए। हम सब को मिलकर इसके लिए प्रयास करने चाहिए। एक सुशिक्षित एवं जिम्मेदार नागरिक होने के नाते सभी भारतीयों को अधिकतर पेड़ लगाने चाहिए एवं प्लास्टिक का प्रयोग कम करना चाहिए।

ताडोबा की यात्रा अंधारी टाइगर रिजर्व: एक सफारी अनुभव



गीतांजली घांगरेकर
सहायक लेखा अधिकारी

भारत के हृदय में स्थित, ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व (TATR) महाराष्ट्र के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। 1,727 वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्र में फैला यह अभयारण्य वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध विविधता के लिए एक अभयारण्य है, जिसमें बंगाल टाइगर (Royal Bengal Tiger) इसका मुख्य आकर्षण है। इस अद्भुत रिजर्व की मेरी यात्रा जीवन को बदल देने वाला अनुभव थी, जिसने मुझे इन शानदार प्राणियों और उन्हें सहारा देने वाले जटिल इकोसिस्टम की अंतरंग झलक प्रदान की।

ताडोबा से नागपुर की दूरी लगभग १४० किलोमीटर है। नागपुर से, हमने एक सुंदर सड़क यात्रा शुरू की, जो छोटी बस्तियों, हरे-भरे खेतों और घने जंगलों से होकर गुजरी। जैसे-जैसे हम ताडोबा के करीब पहुंचे, हवा ताजगी से भर गई और परिदृश्य और भी अदम्य होता गया, जिससे जंगल का माहौल तैयार हो गया जो हमारा इंतजार कर रहा था।

हम अपने आवास पर पहुंचे, जो अभयारण्य के बाहरी इलाके में स्थित एक देहाती लेकिन आरामदायक सफारी लॉज था। प्राकृतिक परिवेश के साथ सहज रूप से घुलने-मिलने के लिए डिज़ाइन किया गया यह लॉज, शहर के जीवन की हलचल से दूर एक शांत विश्राम स्थल

प्रदान करता है। जैसे ही हम अपने कमरों में गए, आगामी सफारी की उत्सुकता बढ़ने लगी।

हमारी पहली सफारी अगली सुबह जल्दी तय की गई थी। हम भोर से पहले उठे, सुबह की ठंडी हवा में उत्सुकता की महक थी। जल्दी-जल्दी नाश्ता करने के बाद, हम अपने जानकार गाइड और एक अनुभवी ड्राइवर के साथ अपनी खुली हवावाली जीप में चढ़ गए। सफारी मोहरली गेट से शुरू हुई, जो रिजर्व के मुख्य प्रवेश द्वारों में से एक है।

जैसे ही हमने जंगल में प्रवेश किया, उगते सूरज ने परिदृश्य पर सुनहरी आभा बिखेरी, जो पत्तियों और मकड़ी के जाले से चिपकी ओस की बूंदों को रोशन कर रही थी। जंगल पक्षियों की चहचहाहट, पत्तियों की सरसराहट और दूर से जानवरों की आवाज़ों से जीवंत





था। हमारे गाइड, एक अनुभवी प्रकृतिवादी थे। उन्होंने रास्ते में विभिन्न पौधों और जानवरों की ओर इशारा करते हुए पार्क के इकोसिस्टम के बारे में अपने विशाल ज्ञान को साझा करना शुरू कर दिया।

वन्यजीवों के पहले संकेत जो हमें मिले, वे थे धब्बेदार हिरणों का झुंड, जो झाड़ियों के बीच से शान से आगे बढ़ रहे थे। उनकी सतर्क आँखें और हिलते हुए कान शिकारियों के हमेशा मौजूद खतरे का सबूत थे। जैसे-जैसे हम जंगल में आगे बढ़े, हमने लंगूरों को पेड़ से पेड़ पर कूदते देखा, उनकी खेलपूर्ण गतिविधियाँ एक सुखद दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं।

अचानक, हमारे गाइड ने ड्राइवर को रुकने का इशारा किया। उसने रास्ते पर ताजा पैरों के निशान देखे थे, जो इस बात का स्पष्ट संकेत था कि हाल ही में एक बाघ यहाँ से गुजरा था। जीप में उत्साह स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता था, जब हम निशानों का अनुसरण करते हुए आगे बढ़े, अपनी आँखें घने जंगल में किसी भी हरकत के लिए स्कैन कर रहे थे। मिनट घंटों की तरह लग रहे थे, और जैसे ही हम उम्मीद खोने लगे, हमारा धैर्य पुरस्कृत हुआ। झाड़ियों से निकलकर, एक शानदार बाघिन दिखाई दी, उसकी आँखें हम पर टिकी हुई थीं।

यह बाघिन, जिसे गाइड्स 'माया' के नाम से जानते थे, देखने लायक थी। वह शक्तिशाली, मांसल शरीर के साथ इतनी शालीनता से चल रही थी कि उसकी ताकत का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था। वह एक पल के लिए रुकी, अपने इलाके का जायजा लिया, फिर चुपचाप जंगल में गायब हो गई। यह मुलाकात, हालांकि संक्षिप्त थी, लेकिन इन शानदार जीवों और उनके आवास की अदम्य सुंदरता ने हमें विस्मित कर दिया।

अगले कुछ दिनों में, हमने रिजर्व के विभिन्न क्षेत्रों का अन्वेषण किया, प्रत्येक ने अद्वितीय परिदृश्य और वन्यजीव अनुभवों की पेशकश की। ताडोबा को कई कोर और बफर ज़ोन में विभाजित किया गया है, जिसमें कोर ज़ोन सबसे अधिक सख्ती से संरक्षित क्षेत्र हैं जहाँ वन्यजीवों को देखने की संभावना सबसे अधिक होती है।

हमारी यात्रा के सबसे रोमांचक क्षणों में से एक ताडोबा झील का दौरा था, जो हरे-भरे वनस्पतियों से घिरा एक शांत जलाशय है। झील पार्क के निवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण जल स्रोत है और यहां भारी गतिविधि होती है। पास ही, मगरमच्छ का एक समूह तट पर धूप सेंक रहा था।

ताडोबा में पक्षियों को देखना एक और



अविस्मरणीय अनुभव था। यह रिजर्व १९५ से ज़्यादा प्रजातियों के पक्षियों का घर है, जो इसे पक्षी विज्ञानियों और पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग बनाता है। हमने यहां नीलपंख, भारतीय रोलर्स, पैराडाइस फ्लाई कैचर, भव्य क्रेस्टेडस पेंटईगल्स और दुर्लभ ग्रे-हेडेड फिश ईगल को देखा। प्रत्येक दृश्य के साथ हमारे गाइड की व्यावहारिक टिप्पणी भी थी, जिसने पार्क की पक्षी विविधता के लिए हमारी प्रशंसा को और गहरा कर दिया।



हमारे गाइड ने अपने पूर्वजों की कहानियाँ साझा कीं, जो पीढ़ियों से जंगल के साथ सद्भाव में रहते थे। उन्होंने औषधीय पौधों की ओर इशारा किया। विभिन्न पेड़ों के पारंपरिक उपयोगों के बारे में बताया और हमें जानवरों के पैरों के निशान पहचानना सिखाया। यह सैर मनुष्यों और प्रकृति के बीच गहरे बंधन की एक विनम्र याद दिलाती है, एक ऐसा बंधन जिसे हमारी आधुनिक दुनिया में अक्सर भुला दिया जाता है।

ताडोबा में हमारे अंतिम दिन सूर्यास्त के समय, हमने रात्रि सफ़ारी की तैयारी की, जो जंगल के रात्रिकालीन जीवन को देखने का एक रोमांचक अवसर

था। शक्तिशाली फ्लैश लाइट और नाइट-विज़न गियर से लैस होकर, हम अंधेरे जंगल में निकल पड़े, वातावरण रहस्य और रोमांच से भरा हुआ था।

रात में जंगल का माहौल बिल्कुल अलग होता है। दिन के समय की सामान्य आवाज़ों की जगह रात के पक्षियों की डरावनी आवाज़ें और अदृश्य जीवों की सरसराहट ने ले ली थी। हमारे गाइड ने बताया कि रिजर्व के कई जानवर रात में सक्रिय रहते हैं और उनसे मिलने की संभावना बहुत ज़्यादा है।

जल्द ही हमें एक जोड़ी चमकती हुई आँखें दिखाई दीं जो हमारी टॉर्च की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थीं। यह एक तेंदुआ था, जो एक पेड़ की शाखा पर बैठा था, उसकी धब्बेदार त्वचा पत्तियों के बीच से छनकर आ रही चांदनी के साथ सहज रूप से घुल-मिल रहा था। तेंदुआ हमें शांत, लगभग उदासीन नज़र से देखता रहा और फिर बिना किसी प्रयास के ज़मीन पर कूद गया और छाया में विलीन हो गया।

आगे चलकर, हमने झाड़ियों में खाना खोजते हुए जंगली सूअरों का एक समूह देखा। रात के सन्नाटे में सिर्फ़ उनकी घुरघुराहट और सूँघने की आवाज़ें ही सुनाई दे रही थीं। थोड़ी देर बाद, हमने शिकार की तलाश में जंगल में घूमते भारतीय भेड़ियों के एक झुंड को देखा, जो चुपचाप शिकार की तलाश में जंगल में घूम रहे थे।

नाइट सफ़ारी का मुख्य आकर्षण एक सुस्त भालू से मुठभेड़ थी। ये मायावी जीव दिन के समय बहुत कम दिखाई देते हैं, जिससे यह नजारा खास बन गया। भालू दीमकों को खोदने में व्यस्त था, जो उस का पसंदीदा भोजन है और हम चुपचाप विस्मय में देखते रहे और उसने हमारी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

अपनी यात्रा के दौरान, हम वन्यजीव संरक्षण के प्रतिपार्क के कर्मचारियों और स्थानीय समुदायों के समर्पण और जुनून से प्रभावित हुए। अंधारी टाइगर रिजर्व सफल संरक्षण प्रयासों का प्रमाण है, जहां पिछले कुछ वर्षों में बाघों की आबादी में अच्छी वृद्धि देखी गई है।

हमारे गाइड ने बाघों और उनके आवास की सुरक्षा के लिए की गई विभिन्न पहलों के बारे में बताया। शिकार विरोधी गश्त, आवास बहाली परियोजनाएं और सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम कुछ प्रमुख रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग किया गया है। स्थानीय समुदायों, विशेषरूप से आदिवासी लोगों की भागीदारी इन प्रयासों में महत्वपूर्ण रही है। वैकल्पिक आजीविका प्रदान करके और उन्हें संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित करके, पार्क प्रबंधन ने स्थानीय लोगों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया है।

हमने संरक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में भी सीखा। वन्यजीवों की निगरानी और उनकी गतिविधियों को ट्रैक करने के लिए कैमरा ट्रैप, जीपीएस कॉलर और ड्रोन का उपयोग किया जाता है, जिससे मूल्यवान डेटा मिलता है जो रिजर्व के प्रभावी प्रबंधन में सहायता करता है। पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं के साथ मिलकर इन तकनीकी प्रगति ने पार्क की जैव विविधता के संरक्षण को काफी हद तक बढ़ाया है।

ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व सिर्फ वन्यजीवों के लिए एक आश्रय स्थल नहीं है; यह प्रकृति के लचीलेपन और इसे संरक्षित करने के लिए मानवीय समर्पण की शक्ति का एक जीवंत प्रमाण है। इस उल्लेखनीय स्थान की मेरी

यात्रा ने प्राकृतिक दुनिया में मौजूद नाजुक संतुलन के बारे में मेरी समझ को गहरा किया और संरक्षण के महत्व में मेरा विश्वास मजबूत किया।

ताडोबा से विदा लेते समय, मैं अपने साथ न केवल अविश्वसनीय वन्य जीव मुठभेड़ों की यादें, बल्कि हमारे ग्रह के प्रति जिम्मेदारी की एक नई भावना भी लेकर गयी। इस अनुभव ने मुझ में प्रकृति की सुंदरता और नाजुकता के लिए गहन प्रशंसा और इसके संरक्षण में, जो भी संभव हो, छोटे-मोटे तरीके से योगदान करने की प्रतिबद्धता पैदा की।

ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व जंगल के बीचों-बीच एक ऐसी यात्रा है, जो एक दुनिया की दुर्लभ झलक पेश करती है जहाँ प्रकृति सर्वोच्च है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ जंगल और उसके निवासियों की अदम्य सुंदरता आत्मा पर एक अमिट छाप छोड़ती है। जो लोग रोमांच, शांति और प्राकृतिक दुनिया के साथ गहरे जुड़ाव की तलाश में हैं, उनके लिए ताडोबा एक ऐसा गंतव्य है जो किसी और की तरह अनुभव का वादा करता है—एक ऐसा अनुभव जो आपके साथ लंबे समय तक रहता है जब तक आप इसके हरे-भरे आगोश से दूर नहीं हो जाते।

सुविचार

अपने लक्ष्य के प्रति अदम्य विश्वास से प्रेरित दृढ़ संकल्पी लोगों का एक छोटा सा समूह भी इतिहास का प्रवाह बदल सकता है।

— महात्मा गांधी

“न जाने कहाँ गई वो राहें”



बाल बिहारी प्रजापति
लेखापाल

उन राहों पर भी मैं चलता था
अब इन राहों पर भी मैं चल रहा हूँ
न जाने कहाँ गई वो राहें ॥
अब दिखती नहीं हैं वो राहें
जब मैं उन राहों पर चलता था
तब उन राहों पर फूल होते थे
रंभाती हुई वो गायें घर को जाती थी
खेत, खलियानों में फसलें लहलहाती थी
न जाने कहाँ गई वो राहें ॥
अब दिखती नहीं हैं वो राहें
जब घर के आँगन में
एक वृद्धा राम भजन गाती थी
सुख का पैगाम दे जाती थी
वो पनघट पर बाला
पानी भरने जाती थी
तो उसके पैरों की पायल
कुछ कह जाती थी
उसकी एक मुस्कराहट से
प्रकृति भी लजा जाती थी ।
न जाने कहाँ गई वो राहें ॥
अब दिखती नहीं हैं वो राहें
डूबता सूरज घर आते
पशु-पंक्षियों का घौसलों पर लौटना

लौटते हुए प्यार भरा संदेश देते जाना,
शायद शहर को गये..
पिया का पता बताती थी।
न जाने कहाँ गई वो राहें ॥
अब दिखती नहीं हैं वो राहें
मंदिरों में घंटिया बजते ही
रामकृष्ण के नाम से सारी
राह भर जाती थी
एक निहार के सारी मानव जाती
धर्म के गीत सुनने जाती थी।
न जाने कहाँ गई वो राहें ॥
अब दिखती नहीं हैं वो राहें
अब राहें सुनी हैं
उन पर वाहनों की हड़बड़ है
धुँएँ का जन्जाल है, धर्म का मलाल है
फैसन का कमाल
और पापियों का मायाजाल है।
हर तरफ अँधेरा है
उजाले में भी
सुरक्षित नहीं हैं ये राहें
न जाने कहाँ गई वो राहें
अब दिखती नहीं हैं वो राहें

“वसुधैव कुटुम्बकम्”



प्रशांत त्रिम्बक कपाले
सेवानिवृत्त प्रभारी हिंदी अधिकारी

अभी पिछले साल की बात है सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड घुमने गया था। कुछ वर्ष पूर्व श्रीलंका, चायना और नेपाल भी गया था। इन सभी देशों में मैंने पाया, भारतीय सभी देशों में सैलानियों के तौर पर हमें मिले। सभी जब विदेशों में मिलते हैं तो बहुत आनंद से स्वयं से अपने भारतीय होने का परिचय देते हैं। अभी इस जुलाई में हमारे पड़ोसी देश भूटान गया था, वहा तो पर्यटक सम्पूर्ण भारतीय थे।

“वसुधैव कुटुम्बकम्” इस शब्द से मेरा परिचय जब मैं हाईस्कूल में था तब से है। निबंध के लिए यह विषय होता था और हमें बताया जाता था की हमारा देश भले ही सीमाओं से अन्य देशों से अलग है, परन्तु हमारा विश्वास है सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। हाल ही में वर्ष २०२३ में जी-२० परिषद की मेजबानी भारत ने की थी और इस अवसर पर देश के बड़े शहरों में कार्यक्रम हुए तब इस का महत्व हम भारतीयों ने जाना।

वसुधैव (वसुधा) = पृथ्वी + कुटुम्बकम् (कुटुम्ब) = परिवार। अर्थात् समस्त पृथ्वीवासी हमारे एक परिवार की तरह है, यह हमारी सनातन संस्कृति का मानना है। वसुधैव कुटुम्बकम् का शाब्दिक अर्थ होता है, धरती ही परिवार है (वसुधा एव कुटुम्बकम्)। अर्थात् यह सम्पूर्ण भूमि हमारा एक परिवार है तथा हम सभी इसके सदस्य हैं जो मिलकर रहते हैं।

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ यह वाक्य आपको भारत की संस्कृति में ही देखने को मिलता है। इसे भारतीयों द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह वाक्य आपको भारत में संसद से लेकर हर कार्यालय में मिल जाएगा। प्राचीन समय से सारी विदेशी संस्कृतियां तथा सभी देश एक-दूसरे के संपर्क में थे और उनमें व्यापार और लेन-देन चलता आ रहा है। पोर्तुगीज, अंग्रेज ने इस देश में आकर व्यापार किया और इस देश पर राज किया।

पुराणों के हिसाब से राजा सत्यकेतु ने पूरी पृथ्वी को सप्त खंडों (सात महाद्वीपों) में बांटा था। जिस विश्व में हम रहते हैं राजा “पृथु” के नाम पर ही हमारे ग्रह का नाम “पृथ्वी” पड़ा। हमारे पूर्वजों का संबंध सम्पूर्ण विश्व से था। अर्जुन की पत्नी “उलुपी” पाताल लोक की थी। (वर्तमान अमेरिका) मय दानव मैक्सिको (माया सभ्यता) का था जिसने पांडवों के लिए इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) में माया महल का निर्माण किया था।

पुराणों में वर्णित एक प्रसंग के अनुसार भगवान वामन ने जब राजा बलि से दान के रूप में तीन पग धरती मांगी थी तब उन्होंने प्रथम पग में समस्त धरती नाप ली थी, दूसरे पग में समस्त आकाश तब भगवान वामन ने बलि से पुछा कि अब तीसरा पग कहां रखूं तब बलि ने तीसरे पग के लिए अपना शरीर दे दिया था। तब भगवान वामन ने उसे पताल पुरी अर्थात् अमेरिका का राज्य दिया था।

इसके अलावा सभी धर्मों की क़रीब - क़रीब एक ही समान जल-प्रलय की कहानी भी सभी

संस्कृतियों की शुरुआत एक ही संस्कृति से होने की कहानी बयां करती है।

मिश्र के पिरामिडों के निर्माण में भारतीय शिल्पियों की भागीदारी भी भारत तथा मिश्र के अंतर्संबंधों को साबित करती है। विश्व भर में सूर्य मंदिर तथा शिवलिंग की उपस्थिति सनातन संस्कृति के फैलाव को दर्शाता है।

डेनमार्क को धेनूमार्ग का, अर्जेंटीना को अर्जुन टीला का, अंटार्कटिका को अंतःकारिक द्वीप का अपभ्रंश माना जा रहा है। अतः कहा जा सकता है सारे देशों, धर्मों तथा संस्कृतियों का कनेक्शन सनातन संस्कृति के साथ रहा है। इसलिए पृथ्वी के सभी लोग हमारे लिए कुटुंब की तरह हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ होता है, यह पूरा विश्व एक परिवार है। हमें समाज व राष्ट्र सभी को अपना समझना चाहिए। हमारे अंदर विश्वबंधुत्व की भावना होनी चाहिए। धर्म में ही नहीं यह हमारे भारत के संस्कार में भी शामिल है। जिस प्रकार व्यक्ति से मिलकर परिवार बनता है, परिवार से समाज और समाज से देश बनता है। उसी प्रकार हमें एक होकर रहना चाहिए। हमारे विचारक व ऋषि-मुनियों ने अनादि काल से वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा को हमारे अंदर संस्कारों के रूप में डालने की कोशिश की है। हर मनुष्य को सुख-दुख को मिलजुलकर बांटना चाहिए। ऊँच-नीच, घृणा, भेदभाव को भूलकर सभी को अपना माने।

उपनिषद् के एक पौराणिक श्लोक के अनुसार “अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्, उदाररचितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्” अर्थात् – यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चरित्र वाले व्यक्तियों की होती है; इसके विपरीत उदार चरित्र वाले लोगों के लिए तो यह संपूर्ण “धरती” ही “एक परिवार” जैसी होती है।

वसुधैव कुटुम्बकम् यह दुनिया के सबसे पुराने सनातन धर्म का एक मूल संस्कार और विचारधारा है, जो सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने एक परिवार की तरह जोड़कर देखती है तथा सभी में समानता का भाव प्रदर्शित करती है।

यह कथन सनातन धर्म के धार्मिक ग्रन्थ तथा इसके अलावा भी इसका कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध वर्णन मिलता है। जो हमें एक बनाए रखने की धारणा को प्रतिपादित करती है।

मानव अधिकार के पदविका पाठ्यक्रम के दौरान भी मैंने पाया सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का एक मंत्र है “वसुधैव कुटुम्बकम्”। माननीय गृहमंत्री जी ने हाल ही में कहा है “मानवाधिकार को भारतीय संदर्भ में नए सिरे से परिभाषित करने की जरूरत है”। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के २६वें स्थापना दिवस के अवसर पर बोलते हुए गृहमंत्री ने कहा “मानवाधिकार को पुलिस ज्यादाती और हिरासत में मौत के दायरे तक सीमित नहीं रखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि मुलभूत जरूरतों से जनता को महरूम रखना भी मानवाधिकारों का उल्लंघन है”।

महात्मा गांधी को १५० वीं जयंती पर याद करते हुए गृह मंत्री जी ने कहा था की उनका एक भजन ‘वैष्णव जन तो तेने कहिए..’ के एक-एक वाक्य का भावार्थ हम लोगों के सामने रखेंगे तो इससे बड़ा मानवाधिकार के लिए कोई चार्टर हो ही नहीं सकता। उन्होंने कहा कि हम सब चाहते हैं कि गांधी जी के सिद्धांत को आज के संदर्भ में प्रासंगिक होकर सामने रखें जाएं क्योंकि वे शाश्वत और अटल हैं। गृहमंत्री जी ने बताया “किस तरह बच्चों, महिलाओं के मानवाधिकार हमारे देश और समाज में मानवाधिकार से संबंधित व्यवस्थाएं पहले से सन्निहित हैं। हमारी परिवार व्यवस्था के अंदर ही महिलाओं और बच्चों के अधिकार की बहुत सारी चीजें बिना कानून से

सुरक्षित हैं”।

मानवाधिकार को भारतीय संदर्भ ने नए सिरे से परिभाषित करने की जरूरत बताते हुए गृह मंत्री जी ने कहा “हमारी संस्कृति, हमारा देश, हमारा समाज वर्षों से संकुचित सोच से ऊपर वसुधैव कुटुंबकम की भावना से सोचने वाला देश है। 'जब आप पूरे विश्व को अपना परिवार समझते हो तो वसुधैव कुटुंबकम के अंदर ही मानवाधिकार का दायित्व समाहित दिखाई पड़ता है'। अर्थात् मानव अधिकार की संकल्पना हमारे भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुंबकम से ही आयी है।

भारत के गृह मंत्री जी के अनुसार आम जनता को विकास से वंचित रखना भी मानवाधिकार का उल्लंघन है। आजादी के ७० साल तक देश में ५ करोड़ लोगों के पास घर नहीं था, ३.५ करोड़ लोगों के घर में बिजली नहीं थी, ५० करोड़ लोगों के पास स्वास्थ्य सुरक्षा नहीं थी, महिलाओं को शौचालय उपलब्ध नहीं थे गृहमंत्री जी ने सवाल उठाया कि क्या ये इन लोगों के मानवाधिकार का हनन नहीं है। सरकार ने करोड़ों लोगों तक इन सुविधाओं को पहुंचाकर एक अलग प्रकार से मानवाधिकार के लिए लड़ाई लड़ी है और सफलता भी प्राप्त की है।



गजल - शिक्षा / तालीम

सैयद इकबाल अली

सेवानिवृत्त सहायक लेखा अधिकारी

जिसने भी इल्म¹ से, शिक्षा से मोहब्बत की है।
उसकी संसार ने, हर दौर में इज्जत की है॥
इल्म वो दीप नहीं, जो प्रज्वलित हो महलों में।
झुगगीयों के जुगनू ने भी दुनियाँ में शोहरत की है॥
बन गया कोई “कलाम” कोई बना “आंबेडकर”।
जिसने दिन-रात, किताबों से मोहब्बत की है॥
बैठकर सोचने से होगा भला क्या हासिल।
हौसलों के पर से उड़ो, जो चाँद की हसरत की है॥
किमती होता है उन लोगों का जीना-मरना।
जिसने जीने के लिए मरने की हिम्मत की है॥
जो है अनभिज्ञ, पढ़ाई से उन्हें क्या मालूम।
कैसे शिक्षा ने, जिवन को जन्नत की है॥

ये वो शहंशाह है जो, शहंशाहों के शहंशाह² है।
जिसने बाटी भी है, शिक्षा भी अर्जित की है।
भविष्य उनका निसंदेश बहुत उज्ज्वल है।
जिसने तन्हा³ ही अंधेरो से बगावत की है॥
आगे बढ़ना है तो, पढ़ना है आवश्यक “इकबाल”।
वरना अनपढ़ ने तो दुनियाँ-ओ-दी⁴ गारत⁵ की है॥

इल्म 1 = शिक्षा

शहंशाह 2 = सम्राट

तन्हा 3 = अकेले

दुनियाँ ओ -दी 4 = संसार और धर्म

गारत 5 = बरबाद, नष्ट

बोलीभाषा और उससे लगाव



मोहम्मद सलीम एस. शेख

कल्याण सहायक

एक भक्ति गीत जिसे देहात में फ़िल्माया गया बोल हैं “मल्हार वारी मोतियान द्यावी भरून नाही तर देवा, देवा मी जातो दुरुन” इस गीत को बोली भाषा में गाया गया जो सुनने में बहुत ही कर्णप्रिय लगता है।

हमारी मराठी बोली भाषा का प्रचार प्रसार भी फिल्मों में, हास्य धारावाहिक के माध्यम से हमारे महाराष्ट्र के कलाकार कर रहे हैं जिसमें प्रमुख नाम हैं अमरावती जिले के श्री भारत गणेशपुरे, बीड के श्री मकरंद अनासपुरे, नागपूर के श्री देवेन्द्र दोड़के, श्री राजेश चिटनवीस आदि। कवियों में विदर्भ की बोली भाषा का प्रचार और उसे प्रसिद्ध करने का श्रेय यवतमाल नेर परसोपंत के श्री मिर्झा रफ़ी अहमद बेग और अमरावती जिला परतवाडा के प्रसिद्ध हास्य कवि श्री राजा धर्माधिकारी तथा बुलढाणा के मराठी शायर अज़ीम नवाज़ राही इन्हे जाता है।

मराठी बहुत समृद्ध भाषा है। सरल और सहज वार्तालाप में बड़ी आत्मीयता और अपनेपन के भाव से परिपूर्ण है। पुणे की मराठी प्रमाण भाषा है, तो मुंबई का लहजा जरा अलग है फिर भी उस शैली का भी अपना एक अस्तित्व है। नागपूर में जब कोई किसी से कहता है “काय करून रायला बे” तो मराठवाडा में “काय चालल राव” पुणे में “काय पंत काय सुरू आहे” तो वही मुंबई में “क्या कर रेला बिडू” इत्यादि। सभी प्रांत के बोली भाषा की अपनी पहचान है। मुझे जब भी महाराष्ट्र के किसी भी प्रांत में जाने का अवसर मिले तो उनकी भाषा और उनके अंदाज को सीखने समझने में अधिक आनंद मिलता है और मिले भी क्यूं ना क्योंकि यह आखिर मेरे अपने भारत देश के महाराष्ट्र की मराठी बोलीभाषा है।

भारतीय विभिन्न भाषा और बोली भाषा इसके कई प्रकार हैं। अपने शहर से निकलने पर कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर भाषा और उसे बोलने का लहजा बदल जाता है ऐसी ही महाराष्ट्र की मराठी भाषा है नागपूर, वर्धा, भंडारा, यवतमाल, अमरावती, गोंदिया, अकोला तथा विदर्भ के हर प्रांत की भाषा मराठी ही है पर हर प्रांत का लहजा अलग अलग है। उसी प्रकार मराठवाडा, मध्य महाराष्ट्र, पश्चिम महाराष्ट्र, कोकण अन्य जगह भी मराठी बोली भाषा के विभिन्न प्रकार हैं जिसका इस्तेमाल गीतकार समय समय पर अपने गीतों के जरिए करते हैं और हम उस भाषा से भी प्रेम करने लगते हैं जैसे की “मराठा तितुका मिळवावा” मराठी कृष्ण धवल फिल्म का गीत “सुर अमी सरदार अमाला काय कुनाची भीती” जिसे संगीतकार पंडित हृदयनाथ मंगेशकर इन्होंने संगीत बद्ध किया। आज अगर इस गीत को जो भी गायक गाते हैं उसे शुद्ध भाषा में गाते देखा जा सकता है, परंतु बोली भाषा में जिस तरह इस गीत को गाया गया मूल रूप में वही सुंदर और कर्णप्रिय लगता है।

आज के जमाने के नए गीतकार संगीतकार भी फिल्म की पटकथा के अनुरूप अपने गीतों में बोली भाषा का बहुत ही सुंदर ढंग से इस्तेमाल करते हैं जैसे की मराठी की बहुचर्चित फिल्म “सैराट” के गीत जो बोली भाषा में होने के बावजूद संपूर्ण भारत देश और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुए। उसी प्रकार “अगं बाई अरे च्या” इस फिल्म में एक पारिवारिक गीत “मायेच्या हळव्या स्पर्शाने फुलते” शुद्ध भाषा में गाया गया है। वही

“बेटियाँ”



मनीष कुमार खरे
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

ओस की एक बूँद-सी होती है बेटियाँ ॥
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती है बेटियाँ ॥
रोशन करेगा बेटा तो एक ही कुल को,
दो-दो कुलों की शान बढ़ाती है बेटियाँ ॥
कोई नहीं है कम दोस्तों, एक दुसरे से कम,
हीरा है अगर बेटा, तो मोती है बेटियाँ ॥
काटों की राह पर ये खुद ही चलती रहेगी,
औरों के लिये फूल ही बोती है बेटियाँ ॥
विधि का विधान है यही दुनिया की रसम है,
मुठ्ठी में भरे नीर-सी होती है बेटियाँ ॥
सच, इस जग में अनमोल होती है बेटियाँ ।

गजल



सैयद इकबाल अली
सेवानिवृत्त सहायक लेखा अधिकारी

किजिए खर्च हरगीज़ न दुश्मनी के लिए।
जिंदगी यू भी बहोत कम है दोस्ती के लिए॥
आदमी तो उसी आदमी को कहते है।
दर्द हो दिल में जिसके हर किसी के लिए॥
लड़खड़ाए कोई अपना तो थामते है सभी।
बात तो जब है बढ़े हाथ अजनबी के लिए॥
किजिएगा बनाकर क्या दैरों-हरम।
बंदा बनना भी जरूरी है बंदगी के लिए॥
घिर गया हूँ जो अंधेरों में गम नहीं ईश्वर।
तेरा अहसास ही काफी है रोशनी के लिए॥
ओढ़-ली-जे भोलेपन पे अक्ल की चादर।
अब ज़माना नहीं “इकबाल” सादगी के लिए॥
दैरों-हरम = मंदिरों-मस्जिद

सुविचार

जिस तरह पतझड़ के बिना पेड़ पर नए पत्ते
नहीं आते, ठीक उसी तरह कठिनाई और
संघर्ष के बिना अच्छे दिन नहीं आते।

सुविचार

वक्त के साथ चलना कोई जरूरी नहीं, सच
के साथ चलिए, एक दिन वक्त आपके साथ
चलेगा ।



इच्छाशक्ति

यशवंत खापरे
सहायक पर्यवेक्षक

इच्छा शक्ति में बड़ा बल है। आये दिन अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि फलां व्यक्ति के हाथ नहीं, पाँव नहीं होकर भी केवल बोलकर उसने एम.बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और ढेर साड़ी डिग्रियाँ प्राप्त कर ली है। वही दूसरी ओर कोई व्यक्ति अपने पैरों में कलम दबाकर लिखाई करता है और 'कैरम' जैसा खेल भी बखूबी खेल लेता है। एक अन्य मुंह में ब्रश पकड़कर चित्रकारी करता है। इच्छा शक्ति, लगन और मेहनत से मनुष्य क्या नहीं कर सकता? इसके माध्यम से वह अपनी प्राकृतिक अक्षमताओं को भी पराजित कर सकता है। मैंने स्वयं ज्योतिहीन/नेत्रहीन व्यक्तियों को दफ्तरों में काम करते हुए और भीड़भाड़ वाली सड़को को बिना किसी मदद के सहारे पार करते हुए देखा है। संक्षेप में, मनुष्य अपनी कमजोरियों का दास ना होकर इच्छाशक्ति के बल पर स्वयं का विजेता बन जाता है। ऐसे विरल व्यक्तियों में गायक कृष्णचंद डे (1894-1962) थे, जो नेत्रहीन होने के बावजूद न केवल अपना भरणपोषण कर सके बल्कि उन्होंने संगीत प्रेमियों को भावपूर्ण भजनों से मंत्रमुग्ध किया और संगीत के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। जब वह मात्र 13 वर्ष के थे उन्होंने अपने नयनों की ज्योति खो दी लेकिन वे हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं बल्कि अपने सम्मोहक कंठ से उन्होंने ऐसे-ऐसे गीत प्रस्तुत किए की आज भी रेडियो पर उनकी आवाज सुनते ही लोग ठिठक जाते हैं।

19 वी शताब्दी के अंतिम दशक का मध्यकाल था। कोलकाता के शिवचंद डे के घर एक पुत्र ने जन्म लिया। इस परिवार के लोग प्रसिद्ध कीर्तनकार थे। नवजात बालक का नाम कृष्णचंद रखा गया। 13 वर्ष की आयु में जब वह 10 वी कक्षा में पढ़ रहे थे कि उनकी दोनों आँखों की ज्योति चली गई। उनका संसार अंधकारमय हो गया। अब क्या किया जाए? इस कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी किन्तु कंठ सुरीला था और गाने में रुचि तो थी ही, बस जीने चाह और किसी पर आश्रित न होने की भावना ने स्वाभिमान को बनाए रखते हुए उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। और फिर क्या? इच्छाशक्ति, लगन और मेहनत से संगीत सीखने में तल्लीन हो गए।

शशिभूषण चटोपाध्याय नाम के नामी वकील थे जो शास्त्रीय संगीत में पारंगत थे। कृष्णचंद डे ने उनसे विधिवत संगीत शिक्षा ग्रहण करनी शुरू की ख्याल और ठुमरी के ज्ञान के बाद उस्ताद बादलखां की शागिर्दी की। फिर दबीर खां और दाजी बाबु ने ध्रुपद का ज्ञान कराया। राधारमण दास ने कीर्तन का रंग चढ़ाया। किन्तु इन सबके ऊपर कृष्णचंद डे पर शशिभूषण चटोपाध्याय का ही प्रभाव गहरा था। 1912 आसपास कृष्णचंद डे ने नेत्रहीन हो जाने के पांच वर्ष बाद सार्वजनिक रूप से अपना प्रथम संगीत प्रदर्शन किया। गीत उन्हीं की रचना थी और

बंदिश भी स्वयं बनाई थी इस गीत ने उन्हें बड़ी प्रसिद्धी दिलाई। आज भी यह गीत बंगाली परिवारों में बड़ी ही श्रद्धा के साथ गाया जाता है। इस गीत के बोल थे “दीन तारिणी तार!” यह राग भालकंस में गाया गया था। इस गीत के साथ ही कृष्णचंद डे का सितारा चमक उठा। उस समय उनकी आयु 18 वर्ष की थी और उन्हें संगीत की विधिवत शिक्षा लिए पांच वर्ष भी नहीं हुए थे। कोलकाता में उस समय प्रो. शिशिर भादुड़ी के नाटकों की धूम थी। कृष्णचंद डे ने रंगमहल थियेटर के नाटकों में भाग लिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व भर में रेडियो प्रसारण शुरू हो गया। 1927 में इंडियन ब्रोडकास्टिंग कंपनी बम्बई और कोलकाता में रेडियो स्टेशन स्थापित किए। कोलकाता स्टेशन के उद्घाटन के ही दिन कृष्णचंद डे जी ने गाकर अपनी आवाज का जादु फैला दिया। इसके बाद ग्रामोफोन कंपनियों में होड़ मच गई और कृष्णचंद डे के एक के बाद एक रिकॉर्ड बाजार में आने लगे, धीरे-धीरे कुल मिलाकर एक हजार रिकॉर्ड बन गए।

सार्वजनिक प्रदर्शनी, नाटकों और प्रसारण के बाद फिल्मों का दौर शुरू हुआ। बाद में मुक फिल्मों के स्थान पर “दृक-श्राव्य” फिल्मों का निर्माण शुरू हो गया था।

वीरेंद्र नाथ सरकार (1901 से 1980) ने 1931 में न्यू थियेटर की स्थापना की, इस फिल्म कंपनी का भारतीय फिल्म कला के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान है। इस संस्था ने 1933 में ‘पुरन भगत’ फिल्म बनाई इसके

निर्देशक देवकी बोस (1899 - 1971) और संगीतकार रायचंद बोराल थे। इसमें दो गायक अभिनेता थे। एक कुंदनलाल सहगल और दूसरे कृष्णचंद डे दोनों ही गायकों ने इसमें कई अमर गीत दिए। कृष्णचंद डे के दो गीतों “जाओ जाओ ऐ मेरे साधू, रहो गुरु के संग” और “क्या कारण है अब रोने का”, ने सहगल के गीतों के साथ धूम मचा दी थी। 1935 में “धूप छाँव” में कृष्णचंद डे के गाए दो और गीतों “बाबा मन की आँखे खोल” और “तेरी गठरी में लागा चोर” ने अपना रंग जमाया था। इस दोनों गीतों का संगीत रायचंद बोराल ने ही दिया था और गीत सुदर्शन ने लिखे थे, जो उन दिनों न्यू थियेटर्स में स्थायी रूप से कथानक, संवाद और गीत लिखते थे।

1937 में देवकी बोस के निर्देशन में न्यू थियेटर्स ने “विद्यापति” बनाई। इस फिल्म में फिर संगीतकार रायचंद बोराल और गायक कृष्णचंद डे की जोड़ी बनी। इस फिल्म के गीत “गोकुल से गए गिरधारी” और ‘पनघट पे कन्हैया आता है’ ने संगीत प्रेमियों का मन जीत लिया। इन गीतों को केदार शर्मा ने लिखा था जो बाद में प्रसिद्ध फिल्म निदेशक बने। विद्यापति में अन्ध-गायक का भावपूर्ण अभिनय भी देखने को मिला, इस फिल्म के गी के पद्यांश के साथ गद्यांश जोड़कर एक अनोखा प्रयोग किया गया था। गीत के बीच कृष्णचंद डे से कहलाया गया था कि अनुराधा रोने से क्या होगा? यह स्वर कृष्णचंद डे ने इतने करुण स्वर में कहा था कि दर्शकों के हृदय भर जाते थे।

कृष्णचंद डे ने अपनी ही निर्माण संस्था के तत्वावधान में बंगला फिल्म ‘पूर्वी’ बनाई। इसके नायक

हमारे नेता

वह स्वयं थे और नायिका थी संध्यारानी। बम्बई के कई हिंदी फिल्मों में काम मिला। स्वयं भी तीन हिंदी फ़िल्में बनाई, उसमें से एक थी 'तमन्ना' जिसके निर्देशक फाणी मजुमदार थे। हिंदी फिल्मों में काम अवश्य किया किन्तु मुख्य रूप से वह बांग्ला फिल्मों अर्थात विशेषकर संगीत प्रधान फिल्मों में ही काम करते थे।

अन्ध गायक कृष्णचंद डे कीर्तन और भजनों के लिए पुरे भारत देश में प्रख्यात थे और लोगों के जहन में बस गए थे। वे शास्त्रीय संगीत में निपुण थे। ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा और गजल सहज भाव से गा लेते थे। बाउल तथा बेलाली पर उनका अधिकार था किन्तु गीतों, भजनों और कीर्तनों में उनका कंठ संगीत प्रेमियों को विशेष सम्मोहित करता था। कृष्णचंद डे का निधन 28 नवंबर 1962 को कोलकाता में उनके मदन घोष बेन स्थित निवास पर हुआ, मृत्यु के कुछ समय पूर्व वे दमा से पीड़ित थे। उस समय उनकी आयु 69 वर्ष की थी, वह अविवाहित थे आज के प्रसिद्ध गायक मन्ना डे उनके भतीजे थे।

कहने का अर्थ यह था कि यदि मानव में इच्छाशक्ति, लगन और मेहनत करने की भावना मन में है तो उसे नेत्रहीन या शरीर के किसी भी अवयव के अभाव होने पर भी कीर्तिमान स्थापित कर सकता है जो हर किसी को ज्ञात है।

सुविचार

दिन उम्मीदों के साथ शुरू होता है,
और अनुभवों के साथ समाप्त होता है।



श्रीमती निशी शर्मा

पत्नी - श्री संतोष कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

आज जिंदगी से कुछ सवाल पूछने चली हूँ मैं
इस दुनिया से कुछ जवाब जानने निकली हूँ मैं
इलेक्शन के वक्त ना जाने नेता लोग क्यों करते हैं
इतने वादे
क्योंकि इलेक्शन के बाद सिर्फ और सिर्फ रहती है
हमारे साथ उनकी झूठी यादें।
एक सवाल है जिसका चाहिए, मुझे बेसब्री से जवाब
कि ये नेता को मिलता क्या है करके झूठे वादे और
तोड़कर आम जनता के ख्वाब।
एक तरफ हमारे नेता हमें दिखाते हैं बड़े-बड़े ख्वाब।
दूसरी तरफ आम इंसान नेताओं के सामने गिड़गिड़ाकर
कहता है “कृपया मेरा ये काम कर दो साब”।
कभी एक रात सड़क पर घर के बाहर गुजार के देखो
एक ही कपड़े को सालों-साल पहनकर देखो। कचरे के
डब्बे से खाना खाकर देखो॥ 3 ॥
और अगर तुमसे ना हो पाए तो जरा हमारे देश के
किसानों को तो देखो।
त्योहारों पर पैसे खर्च करने से सिर्फ तुम्हारी अमीरी
दिखेगी।

एक बार इन पैसों से जरूरतमंद की मदद करके
देखोगे तो सही मायनों में दुआ और खुशियाँ मिलेगी।

हिंसा है माँसाहार



सुरज सु. ठाकरे
वरिष्ठ लेखाकार

मैं कार्यालय वरिष्ठ लेखाकार पद पर कार्यरत हूँ। कुछ वर्षों पूर्व मैं भी “माँसाहार” किया करता था, परंतु बिते कुछ वर्षों में अपने आप में आये इस बदलाव को मैं आपके सामने व्यक्त करना चाहता हूँ।

मुझे पता है, कि मेरे कुछ मित्रगण मेरे इस बात को पढ़कर खुब हसेंगे और मुझे कोसेगे भी, परंतु यह बात सोच कर मैं मेरे इन विचारों को प्रकट ना करूँ यह संभव नहीं है।

अपने को किसी भी तरह से हीन मानना, छोटा मानना, सीमित मानना यही हिंसा है। दुसरे से तुम जीते तो भी दुःख है, दुसरे से तुम हारे तो भी दुःख है। तुम्हारे और दुसरे के बीच कि विभाजन रेखा ये दुःख है, तुम्हारा होना ही दुःख है।

हिंसा में भी मूल बात यह नहीं है की तुमने किसी दुसरे को मारा; मूल बात यह है कि तुम्हारा मन ऐसा हुआ कि तुम मार दो। “जो मन मारने में यकिन रखता है, वो दुसरे के प्रति ही नहीं, सर्वप्रथम अपने प्रति हिंसक होता है!” बात इसकी नहीं कि मुर्गे पर दया करो। बात यह है हिंसक मन के साथ तुम कैसा जीवन बिता रहे थे।

बकरी के बच्चे को मारकर अपने बच्चे के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार कैसे रख सकता है। बच्चा तो बच्चा है। बकरी के बच्चे के प्रति हिंसा तो अपने बच्चे के प्रति भी वहीं हिंसा रहेगी, बस वो हिंसा अलग रूप से अभिव्यक्त होगी। जो आदमी जानवर के प्रति क्रूर है, वो अपने बच्चे के प्रति भी क्रूर रहेगा। वो अपने परिवार के प्रति, दुनिया के प्रति

क्रूरता से ही भरा रहेगा। जब तुम पेट के प्रति चेतना की हत्या करते हो, तब तुम कह रहे हो की पेट बड़ा है और चेतना छोटी है। अपनी पीड़ा पर तो सभी रो लेते है, इंसान तब हुए जब दुसरों की पीड़ा पर भी रो सको।

संसार से छीना-झपटी करके, अपने आप को पूर्ति देने की नाकाम कोशिश को माँसाहार कहते है। माँसाहार छोड़ने का कारण कभी “तर्क” नहीं बनेंगे, माँसाहार छोड़ने का कारण तो सिर्फ “करुणा” बनेगी, प्रेम बनेगा। जिसके दिल में प्रेम जाग गया, बस उसे माँस से घृणा हो जायेगी।

आज अगर कही पर भी भूखमरी है तो वो इसलिए नहीं है कि बहुत कम उत्पादन हो रहा है, वो इसलिए है क्योंकि आदमी लालची है भोग का। नए जीवों का आगमन जरूरी नहीं है, जो है उनको एक गरीमामयी, ऊँची, प्रेमपूर्ण जिंदगी मिले, यह ज्यादा जरूरी है।

अब बात की जाती है, “पशु बली” की तो वास्तव में कहा जाता है कि अपने भीतर की “पशुता को मारो”। आप अपने आप को धार्मिक कहते हो और पशुओं, जीव जंतुओं के साथ आपका हिंसा और क्रूरता का नाता है, तो आप कहीं से, किसी दृष्टी से, किसी कोण से धार्मिक नहीं हैं।

जब रोज करोड़ों, अरबों पशु काटे जाते रहे हो, जब पुरी पृथ्वी वेदना से कराह रही ये, तब किसी निर्जन स्थान पर बैठकर अपनी व्यक्तिगत मुक्ती का प्रयत्न करना न अध्यात्म है, न परामार्थ है, बल्कि घटिया से घटिया स्वार्थ ही नजर आता है।

“जिंदगी का नया दौर”



मनीष कुमार खरे
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर हँसी के लिये वक्त नहीं।
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिंदगी के लिये वक्त नहीं।
सारे नाम मोबाईल में है,
पर दोस्ती के लिये वक्त नहीं।
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिये ही वक्त नहीं।
दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने के लिये वक्त नहीं।
माँ की लोरी का एहसास है,
पर माँ को माँ कहने के लिये वक्त नहीं।
सारे रिश्तों को हम पार कर चुके,
अब तो उन्हें निभाने का वक्त नहीं।
अतः
जिंदगी में हमेशा हँसते रहो,
हँसना जिंदगी की जरूरत है।
जिंदगी जियो तो इस अंदाज में,
कि तुम्हे देखकर सबको लगे,
जिंदगी कितनी खूबसूरत है

जिंदगी का सफर



श्रीमती व्ही. वैशाली
सहायक लेखा अधिकारी

जिंदगी के सफर में कई मुसाफिर आते हैं, जाते हैं
कोई पलभर में अपनी पहचान बना लेते हैं,
कोई हमेशा के लिए मन में बैठ जाते हैं
तो कोई दूर से ही देखते रहते हैं
ऐसा ही सफर चलता रहेगा
कुछ खट्टी, कुछ मीठी यादों के साथ
जिंदगी के सफर में कितने मुसाफिर आते हैं, जाते हैं
किसी की चाह अलग, किसी की राह अलग
किसी का आनंद अलग, किसी का दर्द अलग
किसी का प्यार अलग, किसी की सोच अलग
ऐसा ही सफर चलता रहेगा
कभी खुशी, कभी आसुओं के साथ
जिंदगी के सफर में नयी-पुरानी यादों का सिलसिला
चलता रहेगा
बस हमें ही समझना है कि कौनसी अच्छी यादों
की पूंजी हमारे साथ रखनी है,
जिंदगी का सफर बस ऐसा ही चलता रहेगा, चलता
रहेगा

अंधश्रद्धा



मनीष कुमार खरे
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मदारी की कला को 'तमाशा' कहते हैं। हाथ की सफाई को सभी 'जादू' कहते हैं। यदि कला कोई ढोंगी बाबा दिखाता, तो मूर्ख लोग उसे 'चमत्कार' कहते हैं। 'श्रद्धा' यह प्राचीन समय से जन्मी एक वृद्ध महिला है। अंधविश्वास यह उसका अंधा बालक है। धर्म के हाथ पैर अंधविश्वास में बंधे हुये हैं। धर्म यह नीति के मार्ग से फिसलकर खेती में ऐसा गिरा कि, वह रूढ़ी का गुलाम बन गया। नीले आसमान में स्वर्ग है। वहाँ ईश्वर का निवास होता है। देवी-देवताओं से भरा दरबार है इस तरह से प्रचार किया जाता था।

भारत में तांत्रिकों ने अंधविश्वास की जड़ पाताल तक फैलायी है। कपालिक लोग दहन घाट में रहकर अपनी तपस्या पूरी करते हैं। लोग उन्हें महान शक्तिशाली आदि पदवियों से नवाजते हैं। इस कारण अंधविश्वास से चमत्कारों को अधिक सहायता मिलते जा रही है।

अंधविश्वास ने अनेक कुरीतियों को जन्म दिया। जादू-टोना, झूठ, फरेब, भूत-प्रेत, देवी-देवताओं के साथ भविष्यवाणी बतानेवाले बाबाओं को जन्म दिया। रास्ते से जाते समय बिल्ली का रास्ता काटना, कौवों का चिल्लाना, सुबह बुरे लोगों का मुँह नहीं देखना, शुभ, अशुभ आदि बातें। यूरोप में शुक्रवार को अशुभ मानते हैं जबकि भारत देश में 'मुसलमान' शुक्रवार को पवित्र मानते हैं। आदि बातों ने लोगों के मन में घर बनाया।

'चमत्कार' विश्वास को बहुत ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है। हमारे देश में 140 करोड़ के ऊपर आबादी है और न जाने कितने साधु, संत, फकीर, महात्मा, ढोंगी हैं। चमत्कार के नाम पर अपना जीवन मध्यम वर्गीय, अशिक्षित लोगों को लुटकर खुशी-खुशी बिता रहे हैं।

आसमान के चमत्कारों और मनुष्य इतिहास की झूठी बातों में बहलाकर रखा। मनुष्य को पत्थर, सर्प, वृक्ष, पशु की पूजा करने के लिए प्रोत्साहित करके लुटते गये। विज्ञान ने अनेक आविष्कारों को प्रस्तुत किया। उनमें से कम्प्यूटर, मोबाईल, टेलिविजन आदि महत्त्वपूर्ण चीजें हैं। मौसम ने पूरे जग को एक दूसरे के पास लाकर रखा है। मनुष्य चाँद पर पैर रखकर उस पर निवास करने का प्रयत्न कर रहा है तो दुसरी ओर लोग बुरे विचारों के जाल में फँसते जा रहे हैं। यह कृतज्ञ मानव ढोंगी बाबा के चमत्कारों को अधिक महत्व देकर उनके चमत्कारों का प्रमाणपत्र देते हैं, उनकी पूजा करते हैं, दान देते हैं पर जिन्होंने पूरे विश्व को बांधकर रखा है, दुनिया को नये आविष्कारों से परिचित कराया ऐसे वैज्ञानिकों को भूल गये हैं। और अंधश्रद्धा की खाई में गिरे हैं। इसीलिए आज भी कहा जाता है कि,

“मदारी की कला को तमाशा कहते हैं, हाथ की सफाई को भी जादू कहते हैं।

यही कला कोई ढोंगी बाबा दिखाता है तो मूर्ख लोग उसे 'चमत्कार' कहते हैं।”

हमें भारतीय होने पर गर्व क्यों होना चाहिए?



पीहू भट्टाचार्य
सहायक पर्यवेक्षक

मुझे इसकी समृद्ध परंपरा और विरासत के कारण भारतीय होने पर गर्व है। विविधता में एकता हमारे देश के लिए अद्वितीय है। भारत की सभ्यतागत पहचान इसकी अविश्वसनीय सांस्कृतिक विविधता के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। होली के रंग-बिरंगे उत्सवों से लेकर दिवाली की गंभीरता तक, यह देश परंपराओं, भाषाओं और रीति-रिवाजों का मिश्रण है।

हमें इस अद्भुत भूमि और संस्कृति पर उचित गर्व होना चाहिए जिसमें हमारा पालन-पोषण हुआ। मानव सभ्यता की पालना है हमारी मातृभूमि। हमारे पास महानता की एक प्राचीन विरासत है। सिंधु घाटी सभ्यता 5,000 साल पहले हमारे उपमहाद्वीप में फली-फूली थी।

बीजगणित, त्रिकोणमिति और कैलकुलस की उत्पत्ति भारत में उस समय हुई जब यूरोप में मनुष्य भोजन के लिए जंगलों में शिकार कर रहे थे।

आज, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान के बाद भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने मुख्य रूप से घरेलू विशेषज्ञता और संसाधनों से सुपर कंप्यूटर बनाया है। भारत दुनिया में दूसरे सबसे अधिक संख्या में वैज्ञानिक और इंजीनियर पैदा करता है। हमारी अनेक भाषाएँ अपने अनुष्ठे साहित्यिक खजाने के साथ, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में हमारी प्रतिष्ठा बढ़ा रही है।

1,55,015 से अधिक डाकघरों के साथ भारत में दुनिया का सबसे बड़ा डाक नेटवर्क है। अगस्त 2011 में श्रीनगर के डल झील में एक अद्वितीय फ्लोटिंग पोस्ट ऑफिस का उद्घाटन किया गया था। भारत में सबसे बड़ा नियोजित भारतीय रेलवे है, जो दस लाख से अधिक लोगों को रोजगार देता है।

हालांकि हमारे पास जश्न मनाने के लिए बहुत कुछ है, फिर भी हम कई मायनों में कम पड़ जाते हैं। हमारी वर्तमान स्थिति विरोधाभासों से भरी हुई है। हमारे नागरिक दुनिया के सबसे धनी लोगों में से हैं, और भारत दुनिया में सोने का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। इस बीच, कई भारतीय हाथ-से-मुंह अस्तित्व में रहते हैं। कुछ गंभीर कुपोषण से पीड़ित हैं, जबकि फसल बर्बाद होने और कर्ज असहनीय होने पर किसान आत्महत्या करते रहते हैं। माताएं प्रसव-संबंधी जटिलताओं से मर जाती हैं, जबकि अन्य तपेदिक जैसी इलाज योग्य बीमारियों से मर जाती हैं।

आइए खुद को अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करने के लिए अपनी सभी महान उपलब्धियों को याद करें। आखिरकार, यदि हम अतीत में ऐसे प्रभावशाली कारनामे कर सके, तो आने वाले दिनों में हम निश्चित रूप से और भी बड़े चमत्कार करने में सक्षम होंगे। हॉकी के जादूगर ध्यानचंद की देशभक्ति का जश्न

मनाएं। रबीन्द्रनाथ टैगोर से प्रेरणा लें, जो दुनिया के एकमात्र कवि थे जिन्होंने दो देशों, भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान की रचना की थी। वह साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले एशियाई थे और भारत के ब्रिटिश शासकों द्वारा उन्हें 'नाइटहुड' से सम्मानित किया गया था।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हम आज़ाद देश के आज़ाद लोग हैं। हमारे चुनाव कुल मिलाकर स्वतंत्र और निष्पक्ष होते हैं और पिछले ७५ वर्षों से ऐसा ही होता आ रहा है। यह एक अद्भुत उपलब्धि है, खासकर उस दुनिया में जहां लाखों लोग अधिनायकवादी शासन द्वारा शासित हैं या उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया है। हमारी सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास करती है कि सभी नागरिक स्वतंत्र रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। गुजरात के गिर जंगल के अंदर बानेज नामक स्थान पर एक अकेले मतदाता महंत भरतदास दर्शनदास के लिए २००४ से एक विशेष मतदान केंद्र स्थापित किया गया है। उत्तर पूर्व के पहाड़ों में दूरदराज के गांवों में जहां मोटर योग्य सड़कें नहीं हैं, मतदान अधिकारी चुनाव प्रक्रिया की कर्तव्यनिष्ठा से निगरानी करने के लिए हाथियों पर अपने उपकरणों के साथ पहुंचते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि हमें बोलने की आजादी है।

हमें शिकायत करना अच्छा लगता है कि देश को सिद्धांतहीन राजनेताओं द्वारा कैसे चलाया जाता है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिन नेताओं की हम निंदा करते हैं, वे ही अब तक हमारी मातृभूमि को एक स्वतंत्र देश बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। और क्योंकि

हम एक स्वतंत्र देश में रहते हैं, हम सत्ताओं की ऐसी खुली आलोचना से बच सकते हैं। हमें अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार है, इसलिए हम अपने आधे-अधूरे विचार चिल्लाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। लेकिन जब समाज में सकारात्मक योगदान देने की बात आती है, तो हममें से अधिकांश लोग बिना उंगली उठाए अपने आराम क्षेत्र में चले जाते हैं। आइए हम आत्मनिरीक्षण करें और मौजूदा मुद्दों पर एक संतुलित और सूचित दृष्टिकोण प्राप्त करने का प्रयास करें और सार्वजनिक मुद्दों पर बंदूक उठाने से पहले जिम्मेदारी से कार्य करें। समय आ गया है कि हम भी केवल शिकायत करने के बजाय, अपने छोटे-छोटे प्रयासों से अपने आस-पास की दुनिया को बेहतर बनाने का प्रयास करें।

आखिरकार, पानी की छोटी-छोटी बूँदें ही सागर बनाती हैं। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिक होने पर गर्व करते हुए, हमें यह याद रखना होगा कि “शाश्वत सतर्कता ही स्वतंत्रता की कीमत है”।

सुविचार

मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में राह बना लेती है।

फूल चुन कर एकत्र करने के लिए मत ठहरो। आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर टिबलते रहेंगे।

- रवींद्रनाथ ठाकुर



निवेश

प्रशांत त्रिम्बक कपाले

सेवानिवृत्त प्रभारी हिंदी अधिकारी

जैसे जैसे मैं उम्र से सेवानिवृत्ती के करीब जा रहा था दोस्त पुछते थे कितने माह बाक़ी है, सेवानिवृत्ती के पश्चात क्या करने का इरादा है। कुछ ने सलाह दी “ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर”, कुछ दोस्तों ने सलाह दी फिर कोई छोटी मोटी नौकरी पकड़ लो। कुछ नहीं तो किसी दोस्त के दुकान पर उनका हाथ बँटा लो, कुछ “गैर सरकारी संघटन” (एनजीओ) को ज्वाइन कर लो। मेरे मोबाईल पर बैंकों से मेसेजेस आने लगे। कुछ सहकारी बैंकों के एजेंट मुझे फ़ोन करने लगे। हेल्थ इंशुरैन्स के लिए अलग-अलग कम्पनी से लगातार फ़ोन आते थे। डाक विभाग से पत्नी ने स्वेच्छानिवृत्ति लेने के नाते, डाक विभाग के दो-तीन अभिकर्ता सलाह देकर और आग्रह कर गए “मासिक आय योजना” में निवेश कीजिए। अकेले या ज़्वाईट खाते के विकल्प के साथ और उससे होनेवाली आय एसआयपी में या मासिक आवर्ती योजना में निवेश करने का सुवर्ण अवसर के प्राप्त करने के लिए जानकारी पिरकर गए।

मैंने कई बैंकों के कर्मचारियों से सुना है कि बैंकिंग कर्मचारी के नियोक्ता उनके कर्मियों के लिए सेवानिवृत्ती के पूर्व एक प्रशिक्षण कार्यक्रम रखते हैं जिसमें कर्मियों ने सेवानिवृत्ती के पश्चात कैसे जीना, रहना, उसका मानसिक, आर्थिक नियोजन कैसे करना चाहिए इस सम्बंधी कार्यशाला चलाते हैं अर्थात बैंकों का निजी स्वार्थ भी रहता है कि कर्मियों का धन बैंकों में ही रहता कि उनके तिमाही डीपोजिट भी बढ़ता है।

मेरे एक कार्यालयीन सेवानिवृत्त दोस्त है जो मुझसे से उम्र में 8 वर्ष बड़े हैं उन्होंने मुझे एक दिन फ़ोन किया और मुझसे मिलने की इच्छा जतायी। साथ ही उन्होंने मुझे यह भी बताया कि “मैं आपको किसी निवेश संबंधी कतई जानकारी नहीं दूँगा, तद हेतु मुझे सौ लोग, एजेंट मिल जाएँगे”, मेरी आपसे मुलाक़ात मात्र शुभकामनाएँ सेवानिवृत्ती का आनंद बाटने के लिए है”

31 दिसम्बर को मैं सेवानिवृत्त हो गया। मेरी सेवानिवृत्ती के उपलक्ष में श्रीमतीजी ने बेटे बहू के साथ मिलकर एक “सरप्राइज” पार्टी का आयोजन किया था। इस आयोजन के चलते उन्होंने मेरे बचपन, स्कूल, कॉलेज और कार्यालयीन मित्रों को आमंत्रित किया था। सभी को मिलकर मैं बहुत भावविभोर हुआ। इस समय कुछ मित्रों के शुभकामनाओं के विडियो दिखाए गए।

सरकारी सेवा से सही सलामत सेवानिवृत्त होना एक जश्न का अवसर भी होता है। सेवा करते हुए कभी कोई हमारी पुरानी ग़लती हम पर उतर कर चार्जशीट, सस्पेंशन तक भी ले जा सकती है।

जनवरी माह में मेरे दोस्त मुझ से मिलने के लिए मुझसे समय माँगकर शाम को घर आए। प्रथम उन्होंने मेरी सेवानिवृत्ती पर बधाई दी उनके साथ हुए वार्तालाप के कुछ अंश यहाँ साझा करना चाहता हूँ। मेरे दोस्त काफ़ी सुलझे हुए खुशमिज़ाज व्यक्ती हैं उन्होंने कहा “सेवानिवृत्ती के पश्चात ज़िंदगी आपकी अपनी, स्वयं की होगी। आप अपना धन स्वयं के लिए खर्चा करो, साथ ही ज़िम्मेदारिया भी अकेले ना लेने की सलाह दी। सबसे

अच्छा निवेश अपने स्वास्थ्य पर होना चाहिए चाहे वह धन का हो या फिर समय का। आपकी अपनी ज़िन्दगी का आनंद आपके स्वस्थ रहने पर ही आनंद ले सकते हो। इसके लिए अपनी स्वास्थ्य जाँच नियमित कराए। अनंत सामाजिक, पारिवारिक परेशानियों के साथ रहते हुए अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा खयाल रखे, सुबह का टहलना जीवन का अविभाज्य अंग होना चाहिए। सूरज ऊर्जा का अक्षय स्रोत होता है इस उम्र में विटामिन “डी” की कमी होती है जिसकी पूर्ति सुबह को धूप में टहलकर थोड़ी मात्रा में की जा सकती है जिसे परमात्माने हमें मुफ्त में दिया है।

हमारी अपनी जिंदगी है, एक कालिटी टाईम स्वयं को दे। यदि आपको लगता है कि हम समाज के ऋणी है और हमें समाज को कुछ देना है और समाज सेवा करना है तो किसी सरकारी अस्पताल में जाकर उन मरीजों की पूछ-ताछ करे जिनका कोई नहीं है, उनके साथ बैठकर बातें कर उनका दिल बहलाए या कुछ समय उनके साथ बिताए जिन्हें आपकी ज़रूरत है। उनके चहरे की मुस्कान आपको नई ऊर्जा देगी और मरीज़ को जीने की उम्मीद और आप पाएँगे उनके स्वास्थ्य में होता परिवर्तन।

और एक बात कोई नियमित समूह को ज्वाइन कर गतिविधियाँ जारी रखे। मैंने देखा है कुछ पेंशनर्स समूह सुबह-सुबह प्राणायाम, योगाभ्यास करते हैं साथ ही समूह के सदस्यों का जन्मदिन भी मनाते हैं। अपने पुराने दोस्तों के साथ मिलते रहो, जिनको आप समय नहीं दे पाए उनके साथ बिताए दिनों को याद करो। उनसे गप्पें मारो। पुराने दिन वापिस तो नहीं आएँगे परंतु यादें आपको वही आनंद देगी। जीवन की धारा में आपसे मिले-बिछड़े दोस्तों को फिर समय दो। और उनसे अंतराल में मिलते रहो। खूब पर्यटन करो देश विदेशों में

घूमने से हमें वहाँ की संस्कृति का परिचय होता है। उस क्षेत्र के कला, साहित्य, परम्परा, त्योहार की जानकारी मिलती है। हम इन्हें अपना कर अपने जीवन में विविधता ला सकते हैं।

अब तक आप अपने अभिभावकों को समय नहीं दे पाए उन्हें समय दे, उनकी सेवा करे। जो समय आप उन्हें देगो वही सेवा के रूप में आपको अपने बुढ़ापे में आपके बच्चों द्वारा प्राप्त होता है। कहते हैं ना “जैसी करनी वैसी भरनी” यही दुनिया का उसूल है। सहयोग करे, सहयोग पाए। हमारा किया गया व्यवहार, बोला गया वाक्य उसी दिशा से लौटकर फिर अपने पास आता है और भविष्य में पीड़ा देता है।

यह भी सच है, उम्र सब सिखा देती है। हमारी गतिविधियाँ धीरे-धीरे कम होती है। उस उम्र का सम्मान करे। जब तक सलाह ना माँगी जाए तब तक सलाह ना दे। बिन माँगे सलाह का मोल नहीं होता। मितभाषी-मधुभाषी बने। प्यार दोगे तो प्यार मिलेगा। आपका यह निवेश आपको अच्छा रिटर्न देगा।

बहुत ज़्यादा भविष्य के बारे में ना सोचे, क्योंकि अमोल पालेकर की मूवी के एक गाने में कहा है “आनेवाला पल जानेवाला है”। वर्तमान हमारा है और वर्तमान में किया गया समय का निवेश ही सही निवेश है।

बातों ही बातों में काफ़ी समय व्यतीत हो चुका था। मैंने दोनों के लिए कॉफी बनायी। मैंने उन्हें उनके घर तक छोड़ने की बात छोड़ी। इतने में दोस्त के लड़के का फ़ोन आया। उसने कहा मेरा बेटा मुझे लेने आया है। फिर उसने मुझे कभी घर पर आने का आग्रह किया। मैंने उसे अपना समय मुझे देने के लिए हृदय से धन्यवाद दिया। और इस लेख के लिए विषय, विचार देने के लिए महोदय को दिल से धन्यवाद।

अनाथालय की मेरी यात्रा



कुमारी प्रियंका
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

यह बात २०२१ की है जब मैं बी.एड. के प्रथम वर्ष के प्रथम सेमेस्टर में थी। हमारे एच.ओ.डी. महोदय द्वारा फिल्ड वर्क के रूप में एक प्रोजेक्ट दिया गया था जिसके अंतर्गत हमें किसी विकलांग विद्यालय या किसी अनाथालय जाकर, वहाँ के बच्चों के साथ एक दिन व्यतीत करके उनके दिनचर्या, स्वभाव, व्यक्तित्व और संघर्षों का अध्ययन करके अपना अनुभव व्यक्त करना था।

हम कुछ लड़कियों ने अनाथालय जाने का निश्चय किया। हमने पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में स्थित एक समाज सेवी संगठन को चुना जो की एक अनाथालय भी है। यह संगठन गरीब, असहाय और अनाथ बच्चों की देख-रेख, शिक्षा और अन्य मूलभूत आवश्यकताओं पर काम करता है। यह संगठन बहुत बड़ा तो नहीं है लेकिन हम सभी को बहुत अच्छा लगा।



हमलोग दूसरे दिन सुबह करीब १० बजे वहाँ पहुँचे। अनाथालय के अंदर एक यार्ड था। यार्ड में एक

खेल का मैदान और एक फूलों का बगीचा था। लेकिन यार्ड में कोई भी बच्चा नहीं था क्योंकि वह समय उनके अध्ययन का था। संगठन के कार्यकर्ता से मिलने के बाद, हम एक-एक करके सभी कक्षाओं में गए।

जैसे ही हमने कक्षा में कदम रखा, बच्चों ने मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया। बच्चों को अच्छे से जानने-समझने के लिए हम उनके साथ उनके कक्षाओं में बैठे। सभी बच्चों ने अपना-अपना परिचय दिया। सभी बच्चें बहुत ही मन लगाकर पढ़ रहे थे।

बच्चों के चेहरों पर एक अलग ही मुस्कान थी। यह दिल को छू लेने वाला दृश्य था कि वे इतनी कठिनाईयों से गुजरने के बावजूद भी कितने खुश और चंचल थे। बच्चों की कक्षाएँ समाप्त होने के बाद जब मैंने उनसे बातचीत की, तो मुझे पता चला कि उनमें से अधिकतर ने अपने माता-पिता को खो दिया है या उनके माता-पिता बहुत गरीब हैं जो उनका पालन-पोषण करने में सक्षम नहीं हैं। उनके भोजन, आश्रय एवं शिक्षा की व्यवस्था यह संगठन ही करता है। अपनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद वहाँ के बच्चे बहुत ही आशावादी एवं संतुष्ट थे।

मैं और मेरे मित्रों ने बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जिसमें उनके साथ खेलना,



उन्हें पढ़ाना और उनके साथ बातचीत करना शामिल था। हम उन बच्चों के लिए किताबें, पेन, स्कूल बैग और खाने की कुछ वस्तुएँ भी ले गए थे। इन वस्तुओं को पाकर बच्चे इतने खुश थे मानो इन्हें पूरी दुनिया

मिल गयी हो, उस दिन एहसास हुआ कि छोटी-छोटी चीजें भी किसी को इतनी खुशियाँ दे सकती है।

वे बच्चे तो छोटे-छोटे थे लेकिन उनके सपने बहुत बड़े-बड़े थे। पुछने के दौरान पता चला कि कोई बड़ा हो कर डॉक्टर बनाना चाहता है तो अन्य आई ए एस अधिकारी, इंजीनियर, शिक्षक आदि।

इस यात्रा ने मुझे सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व और दयालुता के छोटे-छोटे कामों से दूसरों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में भी सोचने पर मजबूर किया। हालाँकि हम एक दिन में दुनिया को नहीं बदल सकते लेकिन हम अपने आस-पास के जरूरतमंद लोगों के जीवन में स्वयंसेवा द्वारा बदलाव ला ही सकते हैं।



सर्दियाँ आनेवाली हैं ..



मोहम्मद सलीम एस. शेख
कल्याण सहायक

अब थोड़ा वक़्त बदल जाएगा
सुबह का सवेरा थोड़ी देर से आएगा
शाम का अंधेरा भी जल्द पैर फैलाएगा
मेरे लिए ये मौसम सुहाना बन जाएगा
ऐसे में मेरा मन यहीं तो गाएगा
सर्दियाँ आनेवाली हैं बहारे छानेवाली हैं।

अब मन को तुम भी खूब मचलने देना
खूब हसना खेलना बहारों का मजा भी लेना
जितना जरूरी हो उतना परहेज भी कर लेना
अच्छे गरम कपड़े जल्द खरीद लेना
क्यों की सर्दियाँ आनेवाली हैं बहारें छानेवाली हैं।

हर दुख को सुख की छाया ठंड देती हैं
सर्दियों की आमद गर्मी से निजात देती हैं
रात की ठंड सुबह सूरज से मिला देती हैं
जिससे भागते हैं गर्मी में उसे करीब आने देती हैं।

अब इस एहसास को भी जिलों जरा
प्यारा हैं मौसम तुम इसे समझ भी लो जरा
क्योंकि सर्दियाँ आनेवाली हैं बहारें छानेवाली हैं।

जैसी दृष्टि - वैसी सृष्टि



श्रीमती कविता रमेश चौरिया
लेखापाल

यदि दृष्टिकोन बदला दिया जाये तो अपनी दुनिया बिल्कुल दुसरी ही तरह की बन जाती है। स्वजनों और स्नेही जनों की अच्छाइयों, सेवाओं, उपकारों, सज्जनताओं और उपयोगिताओं को याद किया जाये तो ऐसा लगेगा, मानो वर्षों में पूर्व दिशा से उठते हुए बादलों की तरह उनकी श्रेष्ठताएँ मन, मस्तिष्क में उमड़ती चली आ रही है। उपकार, करुणा, सेवा और सहायता से प्रेम और सहयोग से मेरी यह दुनिया सब इतनी सुंदर लगती है कि उसके कण-कण के प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है और अपने आप दुसरो के उपकार के भार से लदा हुआ सा प्रतीत होता है।

जीवन में हर पल आनंद और संतोष की मंगलमय अनुभूतियाँ उपलब्ध करते रहना अथवा द्वेष और असंतोष की अग्नि में जलते रहना बिल्कुल अपने आप में निज के हाथ की बात है। इसमें न कोई दूसरा बाधक है और न ही सहायक। अपना दृष्टिकोन यदि दोषदर्शी, दोषपूर्ण हो तो उसका प्रतिफल हमें घोर अशांति के रूप में मिलेगा ही और यदि हमारा सोचने का तरीका प्रियदर्शी, गुणग्राही है तो संसार की विविधता और विचित्रता हमारे मार्ग में विशेष बाधक नहीं हो

सकती। संतोष, आनंद की अनुभूतियों का रसास्वादन करने से तब हमें कोई नहीं रोक सकता।

दोनों मार्ग हमारे सामने खुले हुए हैं। जिसे भी चाहे हम प्रसन्नतापूर्वक, स्वेच्छापूर्वक, खुशी-खुशी से हम चुन सकते हैं। उन पर चल सकते हैं। हमारे देखने का दृष्टिकोन सही होना चाहिये। जैसी की हमारी सोच भी सकारात्मक हो। नकारात्मक सोच से हमारी विचारधारायें भी गलत ही होगी। इसलिये हमारे देखने का, किसी के बारे में सोचने समझने का मन में हमारी अंतर्आत्मा भी वैसी होनी चाहिए जिससे हम एक दुसरो को समझने में गलती ना करें। हमारी हजारों अच्छी सोच ही हमारे आगे आने वाली भविष्य की ओर हमें अग्रसर करेगी।

जय हिंद, जय भारत

सुविचार

सत्य स्वतंत्र है उसे बाँधा नहीं जा सकता...
ईमानदारी अमूल्य है, उसकी कीमत नहीं
लगाई जा सकती!



OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

MAKING THE TRANSITION TO A
MODERN DOCUMENT MANAGEMENT
SYSTEM

E-PPO



PAST → **NOW**

Electronic Pension
Payment Order
Digitally Signed Authorities





SMS is also
sent to the
Pensioner
after receiving
and after
finalizing the
case



PAPER → **DIGITAL**



DDO
SENDS:
Service Book+
Pension Proposal+
XML File (Not
applicable to the
Department other
than Sevaarth)



**O/O THE
PAG (A&E)-II,
MAHARASHTRA,
NAGPUR**
Process and Issues
Digitally Signed e-
Authority
PPO,GPO and CPO



TREASURY
Verifies the
Pensioners and Make
Payment of
Pension,Gratuity and
Commutation



PENSIONERS
How to Download the e-Authority:
Go to : <https://mahakosh.gov.in/m/>
Click on : Nivrutvitanwahini
Login : Username: PEN_PPO NUMBER
Password: ifms123

After uploadation of e-Authority on State
Server (Mahakosh) by O/o the
PAG(A&E)-II, form A,B,C etc. is uploaded
by the DDO then it allows Treasury to
make Payment after Verification

भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं निर्धारित लक्ष्य

“ख” क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों के लिए

राजभाषा विभाग का वार्षिक कार्यक्रम			राजभाषा अधिनियम धारा 3(3) का अनुपालन
क्र.	विवरण	निर्धारित लक्ष्य	निम्नलिखित कागजात अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जाए :-
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल, फैक्स, संदेश आदि सहित)		(1) सामान्य आदेश (General Order)
	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%	(2) अधिसूचना (Notification)
	2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%	(3) प्रेस विज्ञप्ति (Press Release)
	3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%	(4) संविदा (Contract)
	4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	(5) करार (Agreement)
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	100%	(6) अनुज्ञप्ति (Licence)
3.	हिन्दी में टिप्पण	50%	(7) अनुज्ञा पत्र (Permit)
4.	हिन्दी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	55%	(8) सूचना और निविदा-प्रारूप (Notice & Form of Tender)
5.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	(9) संकल्प (Resolution)
6.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	(10) नियम (Rule)
7.	हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	(11) संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी कागज-पत्र (Official Papers laid down before House or the both the Houses of Parliament-Other than Report)
8.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	(12) संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative and other Reports laid down before House or the both the Houses of Parliament-Other than Report)
9.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	(13) प्रशासनिक प्रतिवेदन (Administrative Report send to higher offices.)

सामान्य आदेश में निम्नलिखित कागजात सम्मिलित हैं

- ✦ वे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और स्थायी प्रकार के हों।
- ✦ वे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में या उनके लिए हों।
- ✦ वे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

विदर्भ और मराठवाड़ा के 19 जिलों में पेंशनभोगियों की सुविधा के लिए ई-पीपीओ और पेंशन समाधान उपक्रम

■ प्रधान
महालेखाकार
कार्यालय की
पहल

नागपुर। महालेखाकार कार्यालय के अधिकार क्षेत्र के तहत विदर्भ और नागपुर क्षेत्र के 19 जिलों में पेंशनभोगियों के कल्याण के लिए लेखा और हकदारी-2 नागपुर इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश - ई-पीपीओ और सेवानिवृत्त लोगों की संतुष्टि के लिए 'पेंशन समाधान' एक डिजिटल विंडो' शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नियुक्ति प्रधान महालेखाकार कार्यालय नागपुर द्वारा की गई है। एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में, नागपुर जिले के सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के लिए ई-



पीपीओ डिजिटल पहल पिछले साल नवंबर में प्रधान महालेखाकार जया भगत द्वारा शुरू की गई थी।

इस परियोजना को अब मराठवाड़ा और विदर्भ के सभी 19 जिलों तक विस्तारित कर दिया गया है और इस ईपीपीओ परियोजना के सफल परीक्षण को 22 मई 2024 को एक सरकारी निर्णय के माध्यम से महाराष्ट्र

सरकार के वित्त विभाग द्वारा अनुमोदित किया गया है और 1 जून 2024 से विदर्भ और मराठवाड़ा संभाग के सभी 19 जिलों के लिए पीपीओ को लागू करने का निर्णय लिया गया है।

महालेखाकार कार्यालय के माध्यम से एक पारदर्शी, सुरक्षित और उपयोगकर्ता-अनुकूल माध्यम, ई-पीपीओ सुविधा पेंशनभोगियों के लिए उपलब्ध है

और पेंशनभोगियों को उनके मोबाइल पर उनकी पेंशन स्थिति पर एसएमएस अलर्ट प्राप्त होंगे। इस सुविधा के साथ, पेंशनभोगी को प्राधिकरण पत्र उसी दिन प्राप्त होगा जिस दिन प्राधिकरण पत्र को अंतिम रूप दिया गया है और पेंशनभोगी को कभी भी और कहीं भी आसानी से पहुंच प्राप्त होगी, सूचारु प्रसंस्करण और त्वरित वितरण, पेंशनभोगी को एसएमएस

के माध्यम से अधिसूचना के माध्यम से तुरंत जानकारी मिलेगी। महाराष्ट्र सरकार की 'महाकोश' वेबसाइट पर -पीपीओ की आसान उपलब्धता ही इस ई-पीपीओ की विशेषता है। सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संतुष्टि के लिए इस कार्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध गुगल फॉर्म, ऑनलाइन हेल्प डेस्क, टोल फ्री नंबर, डायरेक्ट एप्लीकेशन के

माध्यम से 'पेंशन रिट्रैसल वन डिजिटल विंडो' के माध्यम से शिकायतें दर्ज की जा सकती हैं। पेंशनभोगियों की शिकायतों का निवारण ब्याटसएफ, जूम के माध्यम से पेंशनभोगियों से आमने-सामने संपर्क करके किया जाता है। इस संतुष्टि मंच के माध्यम से अब तक 250 से अधिक पेंशनभोगियों ने अपनी शिकायतों का समाधान किया है।

नवभारत

विदर्भ और मराठवाड़ा के 19 जिलों के लिए योजना ई-पीपीओ और पेंशन समाधान उपक्रम शुरू

■ नागपुर, व्यापार प्रतिनिधि. महालेखाकार कार्यालय के अधिकार क्षेत्र के तहत विदर्भ और नागपुर क्षेत्र के 19 जिलों में पेंशनभोगियों के कल्याण के लिए इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश ई-पीपीओ और सेवानिवृत्त लोगों की संतुष्टि के लिए 'पेंशन समाधान सिंगल डिजिटल विंडो' उपक्रम प्रधान महालेखाकार कार्यालय द्वारा शुरू किया गया है। एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में नागपुर जिले के सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के लिए ई-पीपीओ डिजिटल पहल पिछले वर्ष नवंबर में प्रधान महालेखाकार जया भगत द्वारा शुरू की गई थी। इस परियोजना को



अब मराठवाड़ा और विदर्भ के सभी 19 जिलों तक बढ़ा दिया गया है। 1 जून 2024 से महाराष्ट्र के विदर्भ और मराठवाड़ा डिवीजन के सभी 19 जिलों के लिए पीपीओ लागू करने का निर्णय लिया गया है। महालेखाकार कार्यालय के माध्यम

से एक पारदर्शी, सुरक्षित और उपयोगकर्ता-अनुकूल माध्यम ई-पीपीओ सुविधा पेंशनभोगियों के लिए उपलब्ध है और पेंशनभोगियों को उनके मोबाइल पर एसएमएस के माध्यम से उनकी पेंशन स्थिति के बारे में सूचनाएं मिलेंगी।

